शंकर पुस्तकमाला—पुष्प ३

ठाकुर-ठसक

प्रसिद्ध कवि ठाकुर की अब तक
प्राप्त सम्पूर्ण कविताओं
का सबसे शुद्ध और
बड़ा संग्रह।

सम्पादक—

स्नेहसागर, विनयपत्रिका, राम-
चंद्रिका, रामचरित मानस,
पद्मावत आदि पुस्तकों
के संशोधक

लाला भगवानदीन 'दीन'

प्रोफेसर हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी।

प्रकाशक—

साहित्य सेवक कार्यालय,
काशी।

प्रथमावृत्ति { श्री रामनवमी सं० १९८३ विक्रमीय } मूल्य ।=)

विषय सूची

वक्तव्य

हिन्दी-साहित्य में कितने ही अच्छे कवि हो गये हैं। पर भारत की दुरवस्था से आज दिन उन कवियों की सुन्दर कविताएँ अप्राप्य सी हैं। इससे हिन्दी साहित्य को बड़ी क्षति पहुँच रही है, क्योंकि हमारा दृढ़ विश्वास है कि बिना प्राचीन साहित्य का भली-भाँति अध्ययन किये यदि कोई साहित्य क्षेत्र में अवतीर्ण होता है तो उसका साहित्यिक ज्ञान अधूरा ही रह जाता है। यदि कोई प्राचीन कवियों आचार्यों आदि के ग्रन्थों को न पढ़े तो वह किसी भी भाषा का अच्छा ज्ञाता नहीं हो सकता, क्योंकि साहित्य ही भाषा का जीवन है। वह चाहे प्राचीन हो चाहे नवीन।

जिन ठाकुर की कविता का संग्रह प्रकाशित हो रहा है वे प्राचीन समय के एक ऊँचे कवि थे। उन्होंने कोई काव्य ग्रन्थ लिखा है या नहीं यह दैव जाने पर उनकी कविता जो अबतक मिली है उनके महत्व को प्रत्यक्ष बता रही है। ठाकुर स्वयं कहा करते थे "देखन चाहौ मोहिं जौ मम कविता लखि लेहु" ठाकुर के जो स्फुट छन्द प्राप्य हैं वे उनके भावुक-कवि-हृदय, ऊँचे-विचार, स्पष्ट वादिता, भाषा सौष्ठव, पदलालित्य और उचित प्रयोग आदि की बारम्बार बुलन्द आवाज से दुहाई दे रहे हैं। कवि में क्या शक्ति होती है, वह क्या कर सकता है यह भी ठाकुर के जीवन की कतिपय घटनाओं से पाठकों को विदित हो जायगा। यहाँ पर हम केवल इस बात पर विचार करेंगे कि अब वैसे कवि क्यों नहीं होते?

आधुनिक समय में कवियों के अभाव में देश और समय के साथही साथ प्राचीन काव्य की पठन-पाठनाभिरुचि की अनाशक्ति भी एक कारण है। प्राचीन काव्य का पठन-पाठन

में क्या शक्ति है यह वही जान सकता है जो उसके द्वारा लाभ उठा रहा है ? हमने ऐसे लोगों को देखा है जो इसी प्राचीन कविता के बल पर 'आशुकवि' बने बैठे हैं। प्राचीन कवियों के अच्छे अच्छे हजारों कवित्त और सवैये याद कर वे लोग उन्हीं छंदों के द्वारा शब्दों के उलट फेर से किसी प्रकार की कविता रच सकते हैं और रचते हैं। हमें इस समय यह बताने की आवश्यकता नहीं रह गयी है कि सचमुच इसमें भारी शक्ति है, क्योंकि हमी नहीं सभी काव्य-मर्मज्ञ इस बात को स्वीकार करते हैं कि प्राचीन कविता का अध्ययन आवश्यक है।

* * * *

हमारे हिन्दी साहित्य में तीन व्यक्ति "ठाकुर" नाम के कवि हो गये हैं दो तो असनी (फतेहपुर) के थे और एक जैतपुर (बुन्देलखंड) के। असनीवाले भट्ट थे और जैतपुर वाले कायस्थ। जिनकी कविता प्रायः लोगों के मुख से सुनी जाती है और जिनका लोगों में अधिक मान है वे जैतपुरवाले ठाकुर थे। असनीवाले दोनों ठाकुरों में पहले की कविता अच्छी है। इस समय नाम-साम्य से तीनों कवियों की कविता की खिचड़ी होगई है, और वह सब केवल 'ठाकुर' कवि के नामसे प्रसिद्ध है, 'भारतजीवन प्रेस, काशी' से जो 'ठाकुर शतक' प्रकाशित हो चुका है उसमें भी तीनों की कविताओं की खिचड़ी है और पाठ भी अशुद्ध है। इन सब बातों को देखकर आवश्यकता प्रतीत हो रही थी कि ठाकुर की कविता का एक अच्छा संस्करण निकले। इतने ही में लाला भगवानदीन जी से मालुम हुआ कि उनके पास ठाकुर की लगभग २०० कवित्त हैं जो शुद्ध करके रक्खे हुए हैं। हम लोगों ने उसे ही देखकर प्रकाशित कराया है।

इस पुस्तक में जितने छन्द दिये गये हैं उनकी बड़ी खोज की गयी है। लाला जी ने स्वयं बुन्देलखंड में घूम घूम कर इसकी खोज की है। लालाजी बिजावर भी गये थे, जहाँ ठाकुर के वंशज अब भी मौजूद हैं। वहांसे उनकी जीवनीको प्राप्त किया तथा कविता को भी जँचवाया। अब तक ठाकुर (जैतपुरी) की जितनी कविता प्राप्त हुई है सब इसमें दी गयी है। अन्य ठाकुरों की कविता इसमें नहीं है। पुस्तक में आये हुए कठिन शब्दों के अर्थ भी नोट में दे दिये गये हैं। ठाकुर का जीवन चरित और वंशवृक्ष भी दिया गया है जो प्रामाणिक है। यह जीवनचरित नागरी प्रचारिणी पत्रिका में लगभग १०वर्ष हुए निकल चुका है। जब कि लाला जी ने इसका संशोधन किया है और कविताओं का अन्वेषण किया है तब इसकी अमूल्यता के बारे में कुछ अधिक कहना व्यर्थ है। अन्तमें हम यह आशा करते हैं कि साहित्य प्रेमी गण इसे अपनाकर हमारे उत्साह को उत्तरोत्तर बढ़ाते रहेंगे।

प्रकाशक।

ठाकुर कवि का जीवनचरित

—:❀:—

ठाकुर कवि के मद्धे शिवसिंह, मिस्टर ग्रियर्सन और बाबू हरिश्चन्द्र जी ने संदेह तो किया परन्तु निश्चय करने का कष्ट किसी ने नहीं उठाया। कायस्थ कविमाला नामक ग्रंथके प्रस्तुत करने में जब मुझे कायस्थ कवियों की जीवनियों की खोज हुई तब ज्ञात हुआ कि ठाकुर उपनामधारी कई एक कवि हुए हैं जिनमें से तीन ठाकुर बहुत प्रख्यात हुये हैं। एक प्राचीन ठाकुर कवि असनी जिला फतेपुर निवासी जो संवत् १७०० के लगभग हुए। दूसरे नरहरि वंशी असनी निवासी ठाकुर कवि जिनके पिता का नाम ऋषिनाथ था और जिन्होंने संवत् १८६१ वैक्रमीय में बिहारी सतसई की टीका (देवकीनन्दन टीका) बनाई है। इनका बहुत कुछ वर्णन साहित्याचार्य पंडित अम्बिकादत्त व्यास ने अपने बिहारीबिहार नामक ग्रंथ में लिखा है। तीसरे बुंदेलखंडान्तर्गत जैतपुर निवासी ठाकुर कवि हुए जिनका जीवनचरित्र इस लेख में लिखा है। अब यह प्रश्न पैदा हो सकता है कि कौन कवित्त या सवैया किस ठाकुर का है। इसका उत्तर मेरी ओरसे यह है कि मैंने इन तीनों ठाकुरों की कविता बड़े ध्यान से पढ़ी है और जहाँ तक मेरी बुद्धि में आया यही निश्चय हुआ है कि दोनों असनी निवासी ठाकुरों की कविता बहुत मिलती जुलती पुराने ढंग की है। एक स्थान निवासी होने के कारण भाषामें भी बहुत कम अन्तर है। साहित्य के बंधनों से जकड़ी हुई, नायिकाभेद, अलंकार, नखशिख और षटऋतु के व्यास के भीतर ही घूमकर रहजाने वाली है। उनकी भाषा में अन्तरवेदीय शब्द और बोलचाल के प्रचलित मुहावरे पाये

जाते हैं जिनको अन्य देशीय कवि सहज रीति से प्रयोग में नहीं ला सकते। जैतपुरी ठाकुर की कविता में बहुधा कोई न कोई लोकोक्ति अवश्य पाई जाती है और उनकी भाषा में ऐसे ऐसे बुंदेलखंडी शब्द और मुहावरे पाये जाते हैं कि अन्य देशीय कवि बिना कठिनता के उनका प्रयोग नहीं कर सकते। इसी कारण हाल में जो 'ठाकुरशतक' ग्रंथ भारतजीवन प्रेस, बनारस में छपा है बहुत अशुद्ध है। थोड़ी २ कविता बानगी के ढंग पर हम आगे लिखते हैं और भाषाविद् सज्जनों से प्रार्थना करते हैं कि वे स्वयं न्याय करलें कि हमारा लिखना कहाँ तक ठीक है।

* प्राचीन ठाकुर असनीवाले की कविता *

कोमलता कंज ते गुलाब तें सुगंध लै कै,
    चंद ते प्रकाश कीन्हों उदित उजेरो है।
रूप रति आनन ते चातुरी सुजानन तें,
    नीर नीरवानन तें कौतुक निवेरो है॥
ठाकुर कहत या मसालो विधि कारीगर,
    रचना बिलोकि को न होत चित्त चेरो है।
कंचन को रंग लै सवाद लै सुधा को,
    बसुधा को सुख लूटि कै बनायो मुख तेरो है॥१॥
भूल गई खेल जो जो खेलती खेलौनन तें,
    भूलि गई बोलनि बतानि चंचलाई की।
आवन लगी है लाज देखि मनभावन को,
    भावन लगी है रीति भांति कविताई की॥
ठाकुर कहत जोर जोबन नकीब आय,
    अदल बदल दई ठौर ठकुराई की।

मदन महीप की अवाई लखि होन लागी,
अगल बगल सब फौज लरिकाई की ॥ २ ॥

सजि सूहे दुकूलन बिज्जु छटासी अटानचढ़ीघटा जोवती हैं।
सुचिती ह्वै सुनैं धुनि मोरन की रसमाते संयोग संजोवती हैं ॥
कवि ठाकुर वे पिय दूरि बसैं हम आँसुन सों तन धोवती हैं।
धनि वे धनि पावस की रतियां पति की छतियां लगि सोवती हैं

न्यौते गये घर के सिगरे सो बेरामी को ब्याज कै आजु रही मैं।
ठाकुर है बहिरी इक दासी सो राखी बरोठे बिचारि कै जी मैं ॥
आये भले खिरकी मग ह्वै अस आइबो चाहत ही हुती ही मैं।
आजु निसा भर प्यारे निसा भरि कीजिये लालन केलि खुसी मैं ॥

बौरे रसालन की चढ़ि डारन कूकत कैलिया मौन गहै ना।
ठाकुर कुंजन कुंजन गुंजत भौंरन भीर चुपैबो चहै ना ॥
सीतल मंद सुगंधित बीर समीर लगे तन धीर रहै ना। ब्याकुल
कीन्हों बसन्त बनाय कै जाय कै कन्त सों कोऊ कहै ना ॥ ५ ॥

* असनी वाले दूसरें ठाकुर की कविता *

दो०—पुत्र सुकवि ऋषिनाथ को, हौं है ठाकुर नाम।
असनी बासी मैं कह्यो, या लखि नृप गुणधाम ॥१॥
जाहिर जग जयसाह नृप, धीर बीर कछवाह।
दत्त दक्षिणा देत तो, नित प्रति पर्ब अथाह ॥ २ ॥

कारे लाल करहे पलासन के पुंज तिन्हैं,
आपने झकोरन झुलावन लगी है री।
ताही की ससेटी त्रण पत्रण लपेटी धरा,
धाम ते अकाश धूर धावन लगी है री।
ठाकुर कहत सुचि सौरभ प्रकाशन मो,
आछी भांति रुचि उपजावन लगी है री।

तातो सीरी बैहर वियोग वा संयोग वारी,
आवनि बसंत को जनावन लगी है री ॥ ३ ॥

प्रात झुकामुकि भेष छिपाय कै गागर लै घरते निकरी ती ।
जानि परी न कितेक अवार है जाय परी जहँ होरी धरी ती ।
ठाकुर दौरि परे मोंहि देखि कै भागि बची री बड़ी सुघरी ती ।
बीर की सौं जो किवार न देउं तो मैं होरिहारन हाथ परी ती ॥

आयो बसंत मिलो नहिं कंत सो आनँद में तिय कौ लौं भरैगी ।
जेठहूँ ज्वालन सो जरिहै तन काभिन काम सो कौ लौं लरैगी ।
ठाकुर जो पै न आइहैं श्याम अराम को कौन उपाय करैगी ।
बाय दरार रही छतिया बह बूंद परे अरराय परैगी ॥ ५ ॥

जैतपुरी ठाकुर की कविता ।

दिवरानी जिठानी सबै जगतीं लड़को सुनिहैं न गहो बहियां ।
हमैं सोवन देउ उलाइत का हरि धीर धरौ हिरदै महियां ।
कह ठाकुर क्यौं उकताव लला इतनी सुनि राखिय मो पहियां ।
लब रैन धरी न बकाओ हमैं अबै सेर में पोनो कती नहियां ।

बैर भयो सिगरी नगरी हठि बैर भयो हमरी बखरी में ।
बात उजागर सोच कहा जो घटैगी अफा जो कढ़ै तखरी में ।
ठाकुर कीरति का बरनौं सो अचानक भेंट गली साँकरी में ।
मूसर चोट की भीत कहा बदि कै जब मूंड दियो ओखरी में ॥

पावस में परदेस ते आनि मिले पिय औ मन भाई भई है ।
दादुर मोर पपिहरा बोलत तापर आनि घटा उनई है ।
ठाकुर वा सुखकारी सोहावनि दामिनि कौंध किते धौं गई है ।
री अब तो घनघोर घटा गरजौ बरसौ तुम्हैं धूरि दई है ॥ ३ ॥

पिय प्यार करैं जेहि पै सजनी तेहि की सब भांति निभइयत है ।
मन मान करौं तो परौं भ्रम में फिर पोछे परे पछतइयत है ।

कथि ठाकुर कौन की कासों कहौं दिन देखि दशा बिसरइत है।
अपने अटके सुनु ऐरी भटू निज सौति के मायके जइयत है ॥४॥

बृन्दासी बृन्द अनेक छलीं तहँ गूजरी नेह सों को अँग टोहै।
भौंर की नाव भयो मन ज्यों अब जानि परी बलही अग जो है।
ठाकुर वे ब्रज ठाकुर हैं सु बनो न बनी उनको सब सोहै।
मीर बड़े २ जात बहे तहँ ढोलियै पार लगावत को है ॥ ५ ॥

प्रथम व द्वितीय असनी वाले ठाकुरों की कविता में बेरामी (बीमारी) बरोठा (पौंर) बनायकै (बिलकुल) बैहर (पवन) झुकामुकी (बडे तड़के जब कोई पहचान नहीं सकै) किवाड़ देना (किवाड़ बन्द करना) दरार खाना (फट जाना) इत्यादि ऐसे शब्द हैं जो अधिकतर अन्तरवेद में बोले जाते हैं। और उलायत (जल्दी) तपरी (बनिज) धूर देना (चुनौती देना) बदिकै (हठ करकै) इत्यादि ऐसे शब्द हैं जो बुन्देलखण्ड ही में बोले जाते हैं॥

असनी वाले दोनों ठाकुर भट्ट जाति के थे। जैतपुरी ठाकुर कायस्थ थे। इन्हीं कायस्थ ठाकुर की यह जीवनी है।

❀ जीवनी ❀

आपका पूरा नाम ठाकुरदास था। श्रीवास्तव खरे कायस्थ थे। पिता का नाम गुलाबराय था! जैसे रायगुलाब का प्रसून सब गुलाब पुष्पों से अधिकतम सुगन्धित होता है वैसे ही ये गुलाबराय जी के प्रसून (प्रख्यात सुवन) भी हुए। पिता के नाम को सार्थक करने वाले पुत्र विरले ही होते हैं। पिता के नाम को सार्थक करने के अतिरिक्त इन्होंने अपने नाम को भी सार्थक किया है। भाषा रसिक सज्जनों में से कौन ऐसा होगा जो ठाकुर की कविता का आदर न करता हो। अतएव यदि हम इन्हें भाषा रसिकों का ठाकुर (बादशाह)

कहैं तो क्या अनुचित होगा। इनके पूर्वज काकोरी में रहते थे और इनके पितामह लाला खड्गराय जी अकबर के समय में आगरे की फौजमें साठहजार(६००००)सवार के अफसर थे। इनके पिता का ब्याह बुन्देलखण्डान्तर्गत ओरछा निवासी राव राजा (जो उस समय महाराजा ओरछा के मुसाहिब थे) की पुत्री से हुआ। कहते हैं कि इस बारात में खड्गराय जी बारह हजार (१२०००) शाही सवार लाये थे। मुसाहब जी ने भी एक महीने तक बारात का परिपूर्ण आदर सत्कार किया था। इसी से ठाकुर का वंशविभव समझ लेना चाहिये। बहुत से लोग तर्क करेंगे कि लाला जी फौज के अफसर कैसे। इसका समाधान यह है कि उस समय के कायस्थ निरे मुंशी, मुसद्दी और बाबूजी ही न होते थे बरन् लेखनी राय होने के साथ ही साथ खड्गराय भी होने का दावा और दम रखते थे। अकबर के समय के पश्चात् और खड्गराय के मृत्युवश होने पर किसी कारणवश इनके पिता गुलाबराय जी अपनी ससुराल ओरछे ही में रहने लगे। ओरछे ही में संवत् १८२३ वैक्रमीय में ठाकुर का जन्म हुआ। उस समय के लोग गणित और कविता को ही बुद्धिप्रकाशक समझते थे, इस कारण उसी पुराने ढंग से ठाकुर को गणित में लीलावती और कविता में अनेकार्थ, मानमंजरी, कविप्रिया, रामचन्द्रिकादि पढ़ाये गए। बुद्धिविकासनार्थ ठाकुर ने दो एक पुराणों के भाषानुवाद भी देख डाले और कुछ संस्कृत भी सीखी। यद्यपि हम यह नहीं कह सकते कि वे संस्कृत के पंडित थे क्योंकि ऐसी बात उनको कविता से प्रगट नहीं होती तथापि जितनी संस्कृत भाषा कविता सम्बन्ध में आवश्यक है उतनी वे अवश्य जानते थे। कुछ दिनों बाद इनके वंश के और लोग भी काकोरी छोड़ कर बुन्देलखण्ड आए और जैतपुर बिजावर में बसते गए।

भारतवर्ष में काकोरी ग्राम (जिला लखनऊ) सुबुद्धि; सुजन-जनकस्थल होने के कारण अबतक प्रसिद्ध है, अतएव इस ग्राम निवासी कायस्थ कुल में जो बच्चा पैदा हुआ वह बुद्धिमानी और चातुर्य का बीज अपने हृदय में रखता था। इस पर बुन्देलखण्ड की कविकरहरश्रमाला ने उसके मनोवेग को दुबाला कर दिया, अतएव बचपन ही से ठाकुर को कविता का चसका लगा।

लार्ड मेकाले का कथन है कि कोई मनुष्य उसी भाषा में विज्ञ हो सकता है जिसको वह बोलने पहिले लगा हो और जिसका व्याकरण उसने पीछे सीखा हो। इसी कथन के अनुसार ठाकुर का हाल था अर्थात् ठाकुर ने अपनी मातृभाषा बुन्देलखण्डी भाषा को ही अपनी कविता में बरता। न तो केशवदास और तुलसीदास जी की तरह किताबी भाषा उन्होंने बरती, न पजनेश की तरह नई गढंत की, वरन अपने लिये एक विलक्षण ही भाषा अंगीकार की जैसी किसी दूसरे बुन्देलखंडी कवि को नहीं मिली। कविता में निपुण होकर ठाकुर ने जैतपुर में रहना अखतियार किया। उस समय जैतपुर में महाराज केशरीसिंह जी राजा थे। इनकी बुद्धि और चतुराई को देख महाराज केशरीसिंह इनसे बहुत स्नेह रखने लगे और एक ग्राम परगनो करैया में नानकार के तौर पर ठाकुर को देकर उन्होंने उसे अपना दरबार कवि अंगीकार किया। ठाकुर कभी कभी बिजावर में भी जाकर ठहरा करते, जहां उनके वंश के लोग पहिले से बसते थे। उस समय बिजावर में जो राजा थे उनका भी नाम केशरीसिंह था। जैतपुर नरेश ने जो मान ठाकुर का किया था उसका हाल सुनकर महाराज बिजावर ने भी एक ग्राम जिसका नाम रोरा है नानकार में

उन्हें दिया। इनके काकोरीय वंश के वंशधर लाला हरसेवक लाल अब तक बिजावर में मौजूद हैं और दरबार बिजावर के सरिश्तेदार हैं। ये महाशय कवि तो नहीं हैं परन्तु रियासती काम काज में बड़े चतुर और हिन्दी उर्दू में बहुत योग्य पुरुष हैं।

सर पर पगड़ी, बदन पर खुली बाहों की मिरजई, कमर से कसी हुई एक ओर तलवार, एक ओर बुन्देलखण्डी हाथ भर लम्बी पीतल की दावात, पावों में झब्बेदार बुन्देलखण्डी जूता, यह उस समय के बुन्देलखण्डी कायस्थों का फैशन था। इसी से ठाकुर का भी फोटो समझ लेना चाहिये। न उस समय फोटोग्राफी के यंत्र का चलन था, न उस समय का अब कोई मनुष्य मौजूद है जिससे ठाकुर की सूरत शकल की अनुहार पूछें, परन्तु 'देखन चाहौ मोहि जो मम कविता लखि लेहु, के अनुसार हम ठाकुर के मनोगत भावों को उनकी कविता से समझ कर अनुमान कर सकते हैं कि ठाकुर कवि दूरदर्शी, देश-काल की चाल को समझनेवाले, हँसमुख, सौंदर्योपासक, ईश्वर पर भरोसा रखनेवाले, चतुर और नम्र स्वभाव के मनुष्य थे। जैतपुर नरेश केशरीसिंह जी के देवलोक होने पर उनके पुत्र राजा पारीक्षत नाबालिग थे। उनकी नाबालगी के कारण राज्य काज में गड़बड़ देख ठाकुर बिजावर में रहने लगे, परन्तु जब राजा पारीक्षत सयाने होकर राज्य सिंहासनासीन हुए तो उन्होंने ठाकुर को फिर अपने दरबार में बुला लिया। इन्हीं महाराजा पारीक्षत के समय में ठाकुर की प्रख्याति हुई। महाराज पारीक्षत इनको अपने दरबार का रत्न समझते थे और नानकार के अतिरिक्त समय समय पर उपहार व पुरस्कार देकर इनका सत्कार करते थे। समया-

नुसार ठाकुर जी बुंदेलखण्ड के अन्य राजाओं के दरबार में भी जाया आया करते थे। बांदेवाले हिम्मतबहादुर गोसांई ठाकुर की कविता का बड़ा आदर करते थे और कभी कभी अपने दरबार कवि पद्माकर जी से उन्हें भिड़ा देते और फिर दोनों कवियों की बुद्धिमत्ता का तमाशा देखते।

विशेष बातें।

१—एक समय हिम्मत बहादुर के दरबार में पद्माकर जी और ठाकुर दोनों मौजूद थे। रसमय छेड़ छाड़ की इच्छा से हिम्मत बहादुर ने पद्माकर जी से पूछा कि 'कहिये कवि जी लाला ठाकुर दास जी की कविता कैसी होती है। पद्माकर ने कहा गोसाईं जी लाला साहब की कविता तो अच्छी होती है। परन्तु पद कुछ हलके से जँचते हैं'। ठाकुर ने तत्काल जवाब दिया कि 'इसी से तो हमारी कविता उड़ी २ फिरती है।' वाहरे गुरु! वास्तव में ऐसा ही है। भारतवर्ष के इस सिरे से उस सिरे तक, जिस सूबे में जहां कहीं हिन्दी भाषा रसिक जनों से पूछिये ठाकुर की कविता कुछ न कुछ अवश्य स्मरण होगी। इतना ही नहीं वरन् अन्य ग्रन्थकारों ने अपने अपने ग्रन्थों में उचित स्थान पर इनकी कविता प्रमाण रूप से लिखी है। पद्माकर की कविता को अभी तक यह सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ।

कविता मर्मज्ञ लोग कवि और कविता की परिभाषाओं को लिख गए हैं कि कवि वह है जिसके चित्त पर प्राकृतिक भावों का अर्थात् दुःख सुखादिक का प्रभाव विशेष रूप से पड़े और जैसा सुख-दुख यह स्वयं अनुभव करे ठीक वैसाही दूसरों को समझा देने की सामर्थ उनकी भाषा में हो। जिसके चित्त पर ऐसा प्रभाव पड़े वह कवि है और जिस कविता में यह सामर्थ हो वह कविता है। ऐसा स्वभाव ठाकुर का था और उनकी भाषा

में वैसा सामर्थ्य भी है। अतएव हम ठाकुर को सच्चा कवि और उनकी कविता को सच्ची कविता कहने में कभी संकोच नहीं कर सकते।

२—ठाकुर ने स्वयं यह बात कही है कि कही हुई बात को शब्दों के हेर फेर से फिर से दोहराना कविता नहीं है। वरन् सदैव अनूठी बात कहने का उद्योग करना ही कवि का काम है। प्रमाण लीजियेः—

सवैया

मोतिन कैसी मनोहर माल गुहै तुक अच्छर जोरि बनावै।
प्रेम को पंथ कथा हरि नाम की बात अनूठी बनाय सुनावै॥
ठाकुर सो कवि भावत मोहिं जो राज सभा में बड़प्पन पावै।
पंडित और प्रवीनन को जोइ चित्त हरै सो कवित्त कहावै॥

जान पड़ता है कि ठाकुर ने अपने इसी सिद्धान्त पर स्थित रह कर अपने समकालीन अन्य कवियों की तरह कोई ग्रन्थ नायिका भेद या अलंकार का नहीं रचा वरन् वे सदा फुटकर ही काव्य करते रहे।

❀ ठाकुर की दूरदर्शिता और उनका देशकाल का ज्ञान ❀

३—जिस समय बांदा वाले हिम्मत बहादुर गोसाईं ने धोखा देकर महाराज पारीछत को बांदे बोलाया और महाराज पारीछत तैयार हो कर कुछ दूर निकल गए उस समय ठाकुर जैतपुर में मौजूद न थे। किसी अन्य ग्राम को गये थे, थोड़ी देर के अनन्तर ठाकुर को महाराज साहब के चले जाने की खबर मिली। वे अपनी दूरदर्शिता और देश-काल के ज्ञान से तत्काल समझ गये कि महाराज जी वहां जाकर या तो मारे जायँगे या कैद होंगे (हिम्मत बहादुर ने अंगरेजों से यही वादा किया था)। बहुत काल से ठाकुर कवि महाराज पारीछत का नमक खाते थे। फ़ौरन घोड़े पर सवार हो मारामार

श्रीनगर के निकट महाराज से जा मिले और घोड़े से उतरते ही उन्होंने यह सवैया पढ़ा—

सवैया।

कैसे सुचित्त भये निकसौ विहँसौ बिलसौ हरि दै गलबांहीं।
ये छल छिद्रन की बतियां छलती छिन एक घरी पल मांहीं।
ठाकुर वे जुरि एक भई रचिहैं परपंच कछू ब्रज मांहीं।
हाल चवाइन को दुहचाल सो लाल तुम्हें या दिखात कि नाहीं।

महाराज साहेब उस समय दतुवन कर रहे थे मुसकुरा कर चुप हो रहे। ठाकुर ने दूसरा सवैया यह कहा—

सवैया

निज मंत्र न औरन सों कहने अपने चित चोज बिचारने है।
पुनि नेक को नेक लटे को लटो यह रीति सदा उर धारने है।
कह ठाकुर प्यारे सुजान सुनौ मन की उरझी निरवारने है।
चहुँ ओर से चौचंद चार उठो सो बिचार के यार सँभारने है॥

महाराज पारीछत समझ गए कि साक्षात सरस्वती देवी ही कवि जी के मुख पंकज पर बिराजमान होकर मुझे बांदा जाने से रोक रही हैं, बस वहीं से लौट पड़े। तब हिम्मत बहादुर ने ठाकुर को बोला भेजा। पहिले से ही हिम्मत बहादुर ठाकुर की कविता का आदर करते थे, अतएव, ठाकुर तनक भो न डरे और साधारण स्वभाव से उनके यहां चले गए। हिम्मत बहादुर ने सरे दरबार ठाकुर पर अपना क्रोध प्रकट किया और कैद करने की धमकी दी। ठाकुर ने उसी समय यह कवित्त कहा—

वेई नर निरनय निदान में सराहे जात,
सुखन अघात प्याला प्रेम को पिये रहैं।

हरि रस चन्दन चढ़ाय अंग अंगन में,
नीति को तिलक बेंदी जस की दिये रहैं।
ठाकुर कहत मंजु कंज ते मृदुल मन,
मोहनी सरूप धारे हिम्मत हिये रहैं।
भेंट भये समये कुसमये अचाहि चाहे,
ओर लौं निबाहैं आँखें एकसी किये रहैं॥

हिम्मत बहादुर इस कवित्त के तर्क को समझ तो गए परन्तु क्रोध शान्त न होने के कारण फिर भी कुछ बद्ज़बानी कर बैठे। ठाकुर ने सरे दरबार अपनी तलवार म्यान से निकाल ली और कड़क कर यह कवित्त कहा—

सेवक सिपाही हम उन रजपूतन के,
दान युद्ध जुरिबे में नेकु जे न मुरके।
नीति देन वारे हैं मही के महिपालन को,
कवि उनही के जे सनेही सांचे उर के।
ठाकुर कहत हम बैरी बेवकूफन के,
जालिम दमाद हैं अदानियां ससुर के।
चोंजन के चोर रस मौजन के पातसाह,
ठाकुर कहावत पै चाकर चतुर के।

जब हिम्मत बहादुर ने देखा कि कविजी को क्रोध आगया और सरस्वती जी जिह्वा पर विराज कर कविता-धारा बहा रही है, तब वह दबक रहा और अपने सहज स्वाभाविक छल से मुसकुरा कर बोला कि "बस बस कवि जी बस, हम केवल इतना ही देखना चाहते थे कि आप केवल कवि ही कवि हैं कि पूर्वजों की तरह आपमें कुछ हिम्मत भी है"। इन वचनों ने ठाकुर की क्रोधाग्नि को कुछ २ शान्त कर दिया। उन्होंने तल-

वार म्यान में रख ली और मुसकुरा कर बोले "राजा साहब हिम्मत तो हमारे ऊपर सदैव से अनूप रूप से बलिहार होती रही है आज हमारी हिम्मत कैसे गिर जायगी"। इस पद के व्यंगभरे शब्दों ने हिम्मत बहादुर के चित्त को फड़का दिया, उसने अपने कटु बचनों की क्षमा मांगी और बहुत सा पारितोषिक देकर ठाकुर को बिदा किया। (पाठकों को ज्ञात होना चाहिए कि यह हिम्मत बहादुर जाति के गोसांई थे असल नाम इनका 'अनूपगिरि' था राजा हिम्मत बहादुर शाही खिताब था)।

४—जिस समय ठाकुर कवि महाराज किशोरसिंह पन्ना नरेश के दरबार में गए उस समय राजश्री कुछ म्लानमुख थी, लोगों का रंग ढंग बदला हुआ था, दरबारियों में परस्पर विरोध था, स्वार्थपरता की उन्नति हो रही थी। इन बातों को देख आपने जो कविता बनाई थी उसमें के दो एक सवैया ये हैं।

चाल न वा चरचा न वा चातुरी वा रस रीति न प्रीति को ढौर है।
सांच घटो बढ़ो झूठ जहान में लोभके लाने जहां तहां दौर है।
ठाकुर वेई गोपाल वही हम वोही चवाव रहो इक ठौर है।
मेरेई देखत मेरी भटू सिगरो अज ह्वै गयो और को और है॥

वे परवीन विचच्छन लोग बने पै सबै कछु आन भयो री।
चीखे सवाद जहां अति मीठे सो सीखे स्वभाव नयेई नये री।
ठाकुर कौन सों का कहिये अब ओ चित चाह वे वे समये री।
वे दिन वे सुख वैसे उछाह सो वे सब वीर हेराय गये री॥

इन्हीं महाराज किशोरसिंह की छोटी रानी जिन पर महाराजा जी विशेष प्रेम करते थे इतनी अधिक लज्जावती थीं कि एकान्त स्थल में भी महाराजा साहेब के सामने कभी घूंघट न

उठाती थीं। महाराज साहब चाहते थे कि कुछ देर तक तो भला घूंघट खोल कर हमसे प्रेमालाप किया करें परन्तु महारानी जी न मानती थीं। किसी समय महाराज जी ने बातचीत में यह हाल ठाकुर कवि को सुनाया। ठाकुर ने तुरन्त निम्न लिखित सवैया बनाकर महाराज साहब को दिया और कहा कि आज रात को आप स्वयं यह सवैया पढ़कर महारानी जी को सुनाइएगा।

यौं तरसाइबो कौने बदो मन तो मिलिगो पै मिलै जल जैसो।
कौन दुराव रहो उनसों जिनके संग साथ करौ सुख ऐसो।
ठाकुर या निरधार सुनौ तुम्हैं कौन सुभाव परो है अनैसो।
प्राणपिया घट में बसि कै हँसि कै फिर घूंघट घालिबो कैसो।

कहते हैं कि महारानी साहब ने इस कवित्त के लिये ठाकुर को बहुत कुछ इनाम दिया था और उतनी अधिक लज्जा करनी भी छोड़ दी थी। महाराजा साहब के बैकुंठवास होने पर यही महारानी जी सती हुई थीं। पन्ना में इनका समाधिस्थल अब तक वर्तमान है।

५—ठाकुर की सौन्दर्योपासना और हँसोड़पन निम्न लिखित वार्ताओं से प्रगट होता है।

(१) सौन्दर्योपासना।

कहते हैं कि जिस समय ठाकुर बिजावर में रहते थे उन दिनों एक अत्यन्त रूपवती सुनारिन भी वहां थी। उसके सौन्दर्य के आप बड़े उपासक थे। जिस दिन किसी कारण उसके दर्शन न पाते उस दिन बड़े उदास रहते। गली, घाट जहां कहीं वह मिल जाती हाथ जोड़ कर दंडवत करते और एक कवित्त उसी समय उसकी रूप छटा पर बना कर तैयार

करते और जोर से पढ़ते ताकि वह सुन ले। इतने के अतिरिक्त कोई और अनुचित बासना उनके चित्त में न थी। कुछ दिन तक तो उस सुनारिन ने इनके इस कर्तव्य पर कुछ ध्यान न दिया परन्तु जब उसे ज्ञात हुआ कि कवि जी मेरे स्वरूप पर मोहित हैं तब वह स्वयं किसी न किसी तरह इनको अवश्य दर्शन देती और उस समय की रसमय कविता बड़े ध्यान से सुनती। एक समय वह बीमारी के कारण चार दिन तक मकान से बाहर न निकली। पांचवें दिन रात्रि को ठाकुर ने उसके मकान के पीछे वाली गली में चलते चलते यह सवैया कहा।

गति मेरी यही निसबासर है चित तेरी गलीन के गाहने है।
चित कीन्हों कठोर कहा इतनो अब तोहि नहीं यह चाहने है।
कवि ठाकुर नेकु नहीं दरसी कपटीन को काह सराहने है।
मन भावै सुजान सोई करियो हमैं नेह को नातो निबाहने है।

सुजान शब्द ने इस सवैया में जान डाल कर उसके रस को द्विगुणित कर दिया (कहते हैं उस स्त्री का नाम सुजान था)। इस रूपरस के प्यासे कवि की बाणी ने उसके हेतु औषधि का काम किया। उसी रात्रि भर में वह चंगी हो गई कि दूसरे ही दिन पानी भरने के मिस कुएं पर आकर ठाकुर कवि को उसने दर्शन दिए।

दुनिया बड़ी विचित्र है। जो जैसा होता है बहुधा वह मनुष्य दूसरों को भी वैसाही समझता है। उस स्त्री के घर वालों को कुछ संदेह सा हुआ और उन्होंने उस समय के बिजावर नरेश से कवि जी की कुछ शिकायत की। महाराज जी ने उन लोगों को समझा बुझा संतोष दे बिदा किया। उनके चले जाने पर ठाकुर कवि को बुलाया और पूछा कि इस मामले में

कितनी सत्यता है। ठाकुर ने साफ कह दिया कि मैं उसके सौन्दर्य का उपासक हूँ और अन्य बात से मुझे कुछ सम्बन्ध नहीं। मेरी इस बात के साक्षी नारायण हैं। महाराज जी को बिश्वास नहीं हुआ। दंड स्वरूप सात रोज तक अपनी निज ड्योढ़ी में नज़र कैद रहने की आज्ञा दी। कहते हैं जिस दिन यह आज्ञा दी गई और ठाकुर ड्योढ़ी से बाहर जाने से रोके गए, अकस्मात उसके दूसरे दिन वह कुँआँ जहाँ वह स्त्री पानी भरने आया करती थी और जहाँ जाकर ठाकुर कवि उसके दर्शन किया करते थे सूख गया। अकस्मात कुँआँ सूख जाने की चरचा सारे शहर में फैली। लोग कारण सोचने लगे। उस स्त्री ने अपने पति से कहा कि ठाकुर जी पर आपने निर्दोष संदेह करके उन्हें नज़र कैद कराया है इसी कारण यह कुँआँ सूख गया, यदि वे रिहा न किए जांयगे तो सात दिन में कुल शहर के कुएं सूख जांयगे। पति ने समझा कि यह मेरी स्त्री स्वयं खोटी है, इस बहाने अपने जार को रिहा कराना चाहती है। ऐसा विचार उसने उसके कथन पर ध्यान न दिया। दूसरे दिन उस मुहल्ले भर के (जिस मोहल्ले में वह स्त्री रहती थी) कुल कुएँ सूख गये। तब तो उसके पति को विश्वास आया, जाकर सब हाल महाराज को सुनाया। ठाकुर रिहा किए गए। दूसरे ही दिन सब कुएं ज्यों के त्यों जल से परिपूर्ण हो गए और ठाकुर की अमलता प्रमाणित हो गई। ठाकुर रूठकर बिजावर से चले गये और फिर बिजावर कभी नहीं गए। कहते हैं कि अपने सच्चे रूप रसिक के वियोग से सधवा होने पर भी उस स्त्री ने मरते दम तक कभी शृंगार न किया।

(२) हँसोड़पन ।

जैतपुर नरेश महाराज पारीछत सायंकाल को एक स्थान पर बैठते, जहाँ से सर्वसाधारण के आने जाने का रास्ता था। दरबारी लोग भी आ डटते, चुहल-पुहल होती, ठाकुर कवि भी मौके मौके से अपनी सद्य कविता सुना कर महाराज को प्रसन्न करते। एक महाजन की बहू शौचादि क्रिया को उस रास्ते से आया जाया करती। परन्तु नवयौवना होने पर भी अन्य नवोढ़ाओं की तरह वह चपल न थी। बड़ी गंभीरता के साथ सिर निहुराये घूँघट काढ़े जाया आया करती। राजाओं के दरबारियों में सब प्रकार के मनुष्य होते ही हैं। उस युवती के रूप, गुण और विद्या की प्रशंसा एक दरबारी की श्रवणेन्द्रिय तक पहुँच चुकी थी। अतएव उसके रूप देखने की उसे बड़ी उत्कंठा थी। यह बात महाराज पारीछत को भी ज्ञात थी। एक दिन सबके सामने उस दरबारी ने ठाकुर से कहा कि कवि जी यदि अपनी कविता के बल से इस स्त्री की दृष्टि अपनी समाज की ओर आकर्षित कीजिए तो जानें कि आप सच्चे कवि हैं। दूसरे दिन जब वह स्त्री उस रास्ते से निकली तब ठाकुर ने यह सवैया उच्च स्वर से पढ़ा—

सवैया।

आँखन देखत ध्यान में बोलत नेह बढ़ाये नितै आ नितै जा।
चंदमुखी यह सोच बिहाय कै मानी खुसी अभिमानी कितै जा॥
ठाकुर छैल छबीले छिपे कहुँ सौतिन माहिं सुहाग जितै जा।
दै जा दिखाई री कै जा निहाल बितैजा वियोग चितैजा चितैजा॥

इस सवैया की विद्युत् शक्ति ने उसे उस ओर दृष्टिपात करने के लिये विवश कर दिया। समाज की ओर देख कर

मुसकुरा गई और तत्काल अपना एक सुवर्ण कंकण उतार कर ठाकुर की कवित्वशक्ति का पुरस्कार दे गई। घर जाकर सच्चा हाल उसने अपने ससुर से कह सुनाया। उसके ससुर ने कहा कि दोनों कंकण दे देती तब ठाकुर की कवित्वशक्ति का पूर्ण पुरस्कार होता। महाराज पारीछत उस नवयौवना की यह उदारता देख भौचके से रह गए। पीछे से ज्ञात हुआ कि वह स्त्री स्वयं भी कविता करती थी, विदुषी थी, और "चितै जा चितै जा" के विप्सा प्रयोग पर रीझकर उसने ऐसा किया था। महाराज पारीछत ने कई एक जनाने जेवर अपने तोशा-खाने से निकलवा कर उस स्त्री को उपहार रूप भेजवाए और कहला भेजा कि यह इनाम हम तुमको इस खुशी में देते हैं कि हमारी बस्ती में एक स्त्री भी कविता में निपुण है।

६-ठाकुर कवि यद्यपि कृष्णोपासक थे तथापि राम और कृष्ण को एक ही समझते थे। कहते हैं एक समय आप रोग ग्रसित हुए और वह रोग इतना बढ़ गया कि प्राण बचना कठिन जान पड़ा। महाराज पारीछत ने अपने निज राजवैद्य को आज्ञा दी कि ठाकुर की चिकित्सा करो। वैद्यराज ने औषधि बनाई और कहा कि परसों शुभ दिन से औषधि सेवन करियेगा। ठाकुर रोग की पीड़ा से व्याकुल थे, धीरज न धर सके और निम्नलिखित कवित्त कह के उसी दिन से औषधि सेवन करने लगे।

कवित्त।

राम मेरे पंडित अखंडित सुदिन सोधैं,
राम मेरे गुरु जप मेरे राम नाम हैं।
राम राम गावतहिं राम राम ध्यावतहिं,
राम राम सोचत कटत आठो जाम हैं।

ठाकुर कहत साँची आस मोहि रामही की,
रामही से काम धन धाम मेरे राम हैं।
राम मेरे वैद्य बिसराम मेरे राम साँचो,
राम मेरी औषधि जतन मेरे राम हैं।

कहते है कि औषधि सेवन तो करते जाते थे परन्तु इस कवित्त को हर समय पढ़ते ही रहते। औषधि के प्रभाव और राम की कृपा से एक अठवारे में रोग शांत हो गया। नवें दिन वे अपने काम काज में लगे। इस चरित्र से साफ जान पड़ता है कि ठाकुर कवि राम और कृष्ण में भेद न मानते थे और ईश्वर पर पूर्ण भरोसा रखते थे।

७—जो मनुष्य ईश्वर के ईश्वरत्त्व पर इतना भरोसा रखेगा वह अवश्य नम्र होगा। अधिक प्रमाण अनावश्यक जान पड़ता है।

८—ठाकुर कवि चतुर थे इसका प्रमाण देनाही वृथा है क्योंकि चतुराई तो कविताई की माई है। चतुर न होगा वह कविता क्या करैगा।

९—साधारण कहनि में उच्च सिद्धान्त की बात कहना कवि का मुख्य गुण है। यह गुण ठाकुर में बहुत अधिक था। देखिए बेपरवाही करने पर भी प्रेमपात्र के हृद्गत भाव का भेद आपने किस अच्छे ढंग से खोला है।

वा निरमोहिनि रूप की रासि जो ऊपर ते उर आनति ह्वैहै।
बारहि बार बिलोकि घरी घरी सूरति तो पहिचानति ह्वैहै॥
ठाकुर या मन की परतीत है जो पै सनेह न मानति ह्वैहै।
आवत है नित मेरे लिये इतनो तो विशेष कै जानति ह्वैहै॥

१०—आप सौंदर्योपासक अवश्य थे परन्तु यदि सौंदर्य के साथ साथ कोई अवगुण देखते तो तत्काल उसकी निंदा

करते। एक धनवान पड़ोसी की लड़की जो रूपवती थी और गौने के पश्चात् ससुराल से वापस आई थी दिन में कई बार घर से निकल परोस की सखी सहेलियों से मिलने को आया करती! आपको उसकी यह चंचलता असह्य हुई और निम्न-लिखित सवैया सुना कर उसे डांट बताई।

लहरैं उठैं अंग उमंगन की मद जोबन के लहराती फिरै।
बड़री अँखियान चितै तिरछे चित लोगन के लहराती फिरै॥
कह ठाकुर है अति ओप खरी निरखे न थिरै थहराती फिरै।
सिर ओढ़े उढ़ोनी कसे छुतियां फरिया पहरे फहराती फिरै॥

११—किसी रूपवती स्त्री की जिस छटा पर आपका चित्त प्रसन्न होता उस छटा का चित्र आप तत्काल अपने कविता-केमेरा से खींच पबलिक में पेश करते। निम्नलिखित दो चार फोटो आपके सामने पेश हैं। आपही न्याय कीजिये कि ठाकुर की कविता की शक्ति कैसी थी।

काजर की रेख नैन बेंदाहू लिलार सोहै,
नैनन की कोरतें झकोर खूब दै गई।
करे ज्यों सिंगार सब भूषण अनेक रंग,
काम की उमंग में चोराय चित लै गई॥
ठाकुर कहत प्रीति रीति ना विचारी कछू,
जोबन के मान में गुमान कछु कै गई।
पट छल छाय कै लटकि मुसुकाय कै,
चटाक चित्त चोरिकै भटाक पट दै गई॥

रेसम को गुन, छीन छला कर, ऐंचि के तोरि सनेह रचावै।
देह दसौ अंगुरी कर पाँय बरै सुरझाय कै रंग मचावै॥
सोहत सी मन मोहत सी तन छोहत सी छबि भौंह चलावै।
चंचल नैनन सैनन सों पटवा की बहू नटवा से नचावै॥ २॥
बाहर लौं न कढ़ै कबहूँ कढ़ि देहरी लौं बिछिया झमकावै।

अंचल ओट दै चोट करै अरु ओट अटारी के चंचल गावै ॥
एक पलौ बिसरै न कबौं अरु कोटि कला करि जो ललचावै ।
आंखिन आवै हिये लगि आवै पै प्यारी परोसिन हाथ न आवै ॥
आवै चली गजचाल सौ बाल बिसाल सरूप की रासि तुषी सी ।
ओज मनोज की मौज भरो तन जानि परै सब भांति पुषी सी ॥
ठाकुर को उपमा बरनै सब ओर निहारत एक रुषी सी ।
राखै खुशी मन यारन के अजमानिनी बानिनी चंद्रमुषी सी ॥

१२—त्योहारों और अन्य अन्य आनन्द के समयों पर जो कविता ठाकुर ने रची है बहुत उत्तम है। अखती, फाग, बसंत, दशहरा, हिंडोरा इत्यादि समयों की कविता बहुत सुंदर है। बानगी देखिए।

* अखती ।

अखती रची राधिका मोहन सौं बधू को हठि नाम लिवावती हैं ।
झहरावती भौंह झुकावती फेरि लिये कर लौद खिझावती हैं ॥
कहि ठाकुर काम गुरू के कहेते कहौ जू कहो जू सुनावती हैं ।
रसरीति के प्रीति के प्रीतम को बिसरे मनो अंक पढ़ावती हैं ॥

लांबी लचकारी लौद लीन्हे हौ गोपाललाल,
सो न घालि दीजो घाले घनो रस घटहै ।
छुवै जो जैहे काहू ब्रज बनिता नवेली अंग,
पैंड़ को तिहारी कान्ह एकहू न सटहै ॥
ठाकुर कहत टेक एकहू न रैहै धरी,
संग में सहेली एक एक तें विकट है।

* बैसाष शुक्ल ३ (अक्षय तृतीया) को बुन्देलखंड निवासी नर नारी सज बज कर नगर के बाहर बट पूजन को जाते हैं और एक दूसरे पर चमेली या गुलाब की छड़ी झालते हैं, मर्द से पत्नी का और स्त्री से पति का नाम लिवाते हैं यह त्यौहार अखती के नाम से प्रसिद्ध है ।

मेरे लगि जैहै तो दुहाई वृषभान जू की
ऐसी लौद घालिहौं कि चौअर उपटहै ॥

फाग।

रंग सों माचि रही रसफाग पुरीं गलियां त्यौं गुलाब उलीच में
जाय सकैं न इतै न उतै सो घिरे नर नारि सनेह रगीच में ॥
ठाकुर ऐसो उमाह मचो भयो कौतुक एक सखीन के बीच में।
रंग भरो रसमाती गुवालि गोपालहिं लै गिरी केसर कीच में॥

बसंत।

गावैं पिक बैनी मृगनैनिहू बजावैं बीन,
नाचैं चन्द्रमुखी चारु चौर की चटक पै।
कीरति कुमारी वृषभान की दुलारी राधे,
अटकी बिलोकि लोक लाज की अटक पै॥
ठाकुर कहत चीर केसर के रङ्ग रंगो,
अतर पगो सो मन मोहै पीत पट पै।
देख तो देखात कैसो राजत रसीली आज,
आली री बसंत बनमाली के मुकट पै॥

दशहरा।

धम धम धौंसन की धुनि सुनि लाजैं घन,
फहरैं निसान आसमान अंग छैठे हैं।
केहरी करिंद हय हंस मूसा नादियाहू,
और सब बाहन उमाहन उमैठे हैं॥
ठाकुर कहत सुर असुर समूह नर,
नारिन के जूह नन्द मन्दिर में पैठे हैं।
आवो चलो लीजिये जू कीजिये जनम धन्य,
करुणा निधान कान्ह पान देन बैठे हैं॥

हिंडोरा।

बिंद्राबन युगुल किसोर परना के धाम,
स्याम अभिराम राधे ओर हग जोरे हैं।

सावन की तीज तजवीज कै बसन सूहे,
पहिरे बिमल जामें सौरभ झकोरे हैं।
ठाकुर कहत देत दरस दयाल भये,
देखत देखैयन के लेत चित चोरे हैं।
बोलती हैं मोरैं होती घनन की घोरैं घोर,
दोनौ गठ जोरे आजु झूलत हिंडोरे हैं॥

तात्पर्य यह कि जब हम इनका उस समय के अन्य कवियों से मुक़ाबिला करते हैं तब हम भाषा की सरलता, सरसता, बोल चाल, अनूठी उक्ति और साधारण कहनि में इन्हीं को सबसे बढ़ कर पाते हैं और विवश होकर इन्हें उस समय का कविराज कहना पड़ता है।

संवत् १८८० के लगभग इनका देहान्त होना पाया जाता है। इनके भाई मानिक लाल की एक लड़की बिजावर में ला० हीरालाल को ब्याही थी जिनके प्रपौत्र बकसी गुलाब सिंह जी ख़ासकलम अभी बिजावर में वर्तमान है। ठाकुर के पुत्र का नाम दरयाव सिंह था। ये भी कवि हुए। इनका उपनाम 'चातुर' था। इनका भी जीवन चरित्र हमने तय्यार कर लिया है समय आने पर प्रकाशित किया जायगा। चातुर के पुत्र शंकर प्रसाद हुए। ये भी कवि हुए। इनकी विधवा स्त्री आज दिन बिजावर में वर्तमान है। पुत्र कोई नहीं। ठाकुर कवि का वंशवृक्ष जो हमको बिजावर निवासी लाला हरसेवकलाल से मिला है नीचे लिखा जाता है।

इस जीवनी के लिखने में लाला देवीप्रसाद जी हेडमास्टर बिजावर ने हमें विशेष सहायता दी है अतएव हम उनको विशेष धन्यवाद देते हैं।

भगवानदीन।

ठाकुर कवि का वंशवृक्ष ।

ये महाशय अभी वर्तमान हैं
सरकार बिजावर में सरिश्तेदार हैं ।

हर सेवक लाल

गुरुकुल शरण

जयबिहारी

नंदलाल

रोशन लाल

इनकी विधवा स्त्री अभी
बिजावर में वर्तमान है ।

शंकर प्रसाद
(शंकर)

दरयाव सिंह
(चातुर)

ठाकुरदास
(ठाकुर)
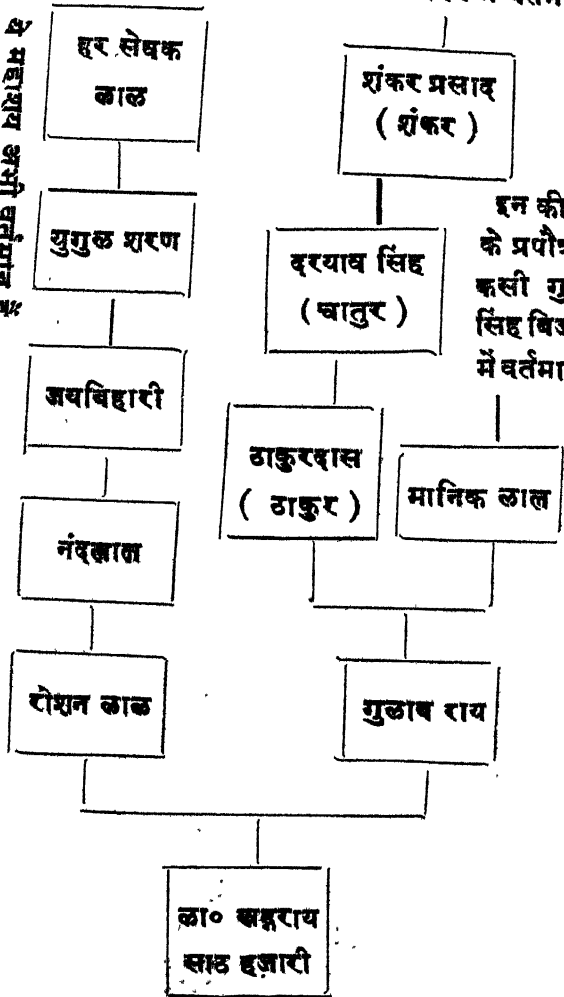
इन की पुत्री
के प्रपौत्र ब-
कसी गुलाब
सिंह बिजावर
में वर्तमान हैं।

मानिक लाल

गुलाब राय

ला० भगवानदास
लाठ हजारी

ठाकुर-ठसक

गणेश बंदना

(घनाक्षरी)

प्रणव प्रसिद्ध आदि मंगल महोदधि सो,
जोई उर ध्यावै तासु बेस रखवारो है
बुद्धि को भँडार अवतार करतार हू को,
विद्या को सिंगार सदा सुख देनवारो है
ठाकुर कहत महा छलियान छलिबे को,
दुःख दल दलिबे को दिग्गज दँतारो है।
शंभु को दुलारो गिरिजा को प्राण प्यारो सदा,
टेढ़ी सूंड़वारो सोई साहेब हमारो है ॥ १ ॥

राम बंदना

(घनाक्षरी)

राम मेरे पण्डित अखंडित सुदिन सोधैं,
राम मेरे गुरु जप मेरे राम नाम हैं।
राम नाम गावतहिं राम नाम ध्यावतहिं,
राम राम सोचत कहत आठो जाम हैं।
ठाकुर कहत साँची आस मोहिं राम ही की,
राम ही से काम धन धाम मेरो राम हैं।
राम मेरे बैद बिसराम मेरो राम सांचो,
राम मेरी ओषद जतन मेरे राम हैं ॥ २ ॥

युगुल चरण बंदना

(घनाक्षरी)

झूम देइ झूला में झुलावती जसोदा माय,
चूम चूम बदन बलैया लेत प्यारे की ।
झीनी सोहै झँगुली औ झालर झँडूली लसै,
अँखिया रसीली नीकी कंज सी सुखारे की ।
ठाकुर कहत चित चोर चितवन चारु,
रूप में मिलत त्यौं किलौलैं किलकारे की ।
कंजहू ते कोरीं जिन्हैं बंदत महेश अज,
लागै सबै पैंया या गोबिंद गभुवारे की ॥ ३ ॥

मेंहदी लपेटे लाल लाल बस कीन्हें निज,
छीगुनी अनौटा नगजटित सँवारे हैं ।
दीपति के दीप तरवान को बखानै कौन,
पांचो अँगुरिन मैन सर पाँचौ पारे हैं ।
ठाकुर कहत ठकुराई के निकेत रस,
रूप के भँडार निरधार निरधारे हैं ।
पंकज बरण अशरण के शरण राधे,
रावरे चरण सुख करन हमारे हैं ॥ ४ ॥

ईश महिमा

(घनाक्षरी)

एकै खिन खिन माँझ पावै पद साहिबी को,
एकै खिन खिन माँहि होत लटपट हैं ।
एकै जीव जीवत हैं उमर अंदाज भर,
एकै जीव होतै हिंसु होत चटपट हैं ॥

ठाकुर कहत कोऊ हरि-हरदास जे हैं,
तिनकौं न व्यापैं जे दुनी के खटपट हैं।
सटपट सारी देखी घट पट वारी चीज,
नटखट रावरे अजब अटपट हैं॥ ५॥

(सवैया)

छोटे को छोटो बड़े को बड़ो औ लटे को लटो उपजाय दयो है।
शुद्ध को शुद्ध अशुद्ध अशुद्ध को आपुन सीख सिखाय दयो है॥
ठाकुर जासों लगो जगदातम आतम का बिसराय दयो है।
देखिये वाको बिचार अनूपम एक को एक लगाय दयो है॥६॥

ईश विलक्षणता

(घनाक्षरी)

छिपिया १ को दूधभात खीचरी हू करमा की,
चक्करा२ रैदास जू चमार हू के खाये हैं।
बिदुर की भाजी रोटी बथुआ समां३ की रुची,
बीदुरैन ४ केर ५ छोल छिकुला खवाये हैं।
करिकै करार आय बौध अवतार ६ लेय,
आपनी पुरी में एक पातरी जिमाये हैं।
नीच परसंगी जात पाँति के न अंगी ऐसे,
ठाकुर दोरंगी तो सदा ते होत आये हैं॥७॥

(सवैया)

मेवा बई घनी काबुल में बिंद्रावन आनि करील जमाये।
राधिका सी शुभ बाम बिहाय कै कूबरी संग सनेह बढ़ाये।
मेवा तजी दुरजोधन की बिदुराइन के घर छोकल खाये।
ठाकुर ठाकुर की क्या कहौं सदा ठाकुर बावरे७ होतई आये ८॥

---

१ दरजी, २ सूरा, ३ सावां, (अन्न) ४ बिदुर की स्त्री; ५ केला,
६ जगन्नाथ जी ७ यह शब्द हमने वदल दिया है यहांपर अति कटु शब्द था।

निवेदन

(घनाक्षरी)

दौलत जो दीजौ तौ न दीजौ कछु सोच फिर,
पतौ बर दीजौ मेरो जनम सुधारियो ।
संग परबीनन को दीनन पै दाया नित,
प्रेम मैं मगन ऐसे दिन जु निवारियो ॥
ठाकुर कहत जो अधीन भयौ रावरे तौ,
जासौं जैसौ नातो तासौं तैसौ ओर पारियो ।
ऐहो ब्रजराज तेरे पाँइ कर जोरे गहौं,
प्रानहूँ नजर पै न नियत बिगारियो ॥ ६ ॥

जो सुख देइ तो देइ दई दुख देइ न देख हिये डरने है ।
होत न काहू की नेकी करी अब यौं निरधारि हिये धरने है ॥
ठाकुर भाँतिन भाँति अधीन ह्वै दीन ह्वै आइ पस्यो सरने है ।
को करि सोच वृथा ही मरै हरि होने वही जो तुम्हैं करने है १०

हारि पस्यो लरि ह्वै बलहीन सो ग्राह तें लै गज तू जितयौ रे ।
फेर सुन्यो प्रहलाद के साँकरे आवन को न खिनो बितयौ रे ॥
ठाकुर हौं अजामेल ते आगरौ पापी उजागरौ यौं हितयौ रे ।
रावरो ओर चितोत चितोत किते दिन बीते न तूँ चितयौ रे ११

काव्य रचना

(घनाक्षरी)

सीख लीन्हों मीन मृग खंजन कमल नैन,
सीख लीन्हों यश औ प्रताप को कहानो है
सीख लीन्हों कल्पवृक्ष कामधेनु चिन्तामणि,
सीख लीन्हों मेर औ कुबेर गिर आनो है ।
ठाकुर कहत या की बड़ी है कठिन बात,
याको नहीं भूलि कहूँ बाँधि[illegible] आनो है ।

डेल सो बनाय आय मेलत सभा के बीच,
लोगन कबित्त कीबो खेल करि जानो है ॥ १२ ॥

सवैया।

मोतिन कैसी मनोहर माल गुहै तुक अच्छर जोरि बनावै।
प्रेम को पंथ कथा हरिनाम की बात अनूठी बनाइ सुनावै ॥
ठाकुर सो कवि भावत मोहिं जो राजसभा में बड़प्पन पावै।
पण्डित लोक प्रवीनन को जोइ चित्त हरै सो कवित्त कहावै १३

निज स्वभाव

सेवक सिपाही हम उन रजपूतन के,
दान युद्ध जुरिबे में नेकु जे न मुरके।
नीति देनवारे हैं मही के महिपालन कों,
कवि उनहीं के जे सनेही साँचे उर के ॥
ठाकुर कहत हम बैरी बेवकूफन के,
जालिम दमाद हैं अदानियाँ ससुर के।
चोजन के चोर रस मौजन के पातसाहि,
ठाकुर कहावत पै चाकर चतुर के ॥१४॥

उपदेश

सवैया।

मन मेरो मतङ्ग भयौ मदमत्त सु माया समुद्र में आन धस्यो है।
अरु ज्ञान महावत लाजकी आँकुस सङ्ककी साँकर नाहिं गस्यौ है
कह ठाकुर मैं हूँ उपाय किये वह आवै न हाथ कुसंग बस्यो है।
नित घींचपै मीच न नीचहिंसूझतमोहके कीचकेबीचफँस्यौहै१५
कैसे सुचित्त भये निकसौ नहिं दैबौ करौ सब के गलबाहीं।
जे छल छिद्रन के छल तोकती हैं कपटी हित की अवगाहीं ॥

ते जुरि कै सब एक भई परपञ्च कछू रचिहैं ब्रज माहीं ।
हालचवाइन कौ दहुचाल सु लाल तुम्हैं या दिखात की नाहीं ।
कहिबे सुनिबे की कछू नहियां लटी औ भलीको दुख पावने है ।
इनकी मरजी की सबै करने अपने मन को समझावने है ॥
कबि ठाकुर लाल के देखिबे कौं अब मन्त्र कोई उर ल्यावने है ।
इन चौंच दहाइन में परिकै समयो यह बीर बरावने है ॥ १७ ॥
एकही सों चित चाहिये ओर लौं बीच दगा को परै नहिं डांको ।
मानिक सो मन बेंचि के मोहन फेर कहा परखाइबो ताको ॥
ठाकुर काम न या सबको अब लाखन में परवान है जाको ।
प्रीति करै मैं लगै है कहा करिकै इक ओर निबाहिबो बांको १८

मेरौ कही मान मन सपनौ सो जान जग,
छोड़ि अभिमान फेर ऐसो नहीं दाव रे ।
दीन ह्वै दया को सीख सम्पति बिपत भीख,
एक सम दीख नहीं बनै है बनाव रे ॥
ठाकुर कहत ब्रजचन्द चन्दमुखी राधा,
वृन्द्राबन बीथिन में हरि गुन गाव रे ।
बीति जात उमर भँडार तन रीति जात,
बीति जात काल के हवाले होत बावरे ॥ १९ ॥

* अद्धर को है अधार हरी नर बन्धक बन्धन मांझ रस्यो है ।
दोस लगावत दीनदयालहिं हौंसु हिये हर भांति नस्यो है ॥
ठाकुर याको तु भेद न जानत माया के माँसन माझ धँस्यो है ।
बींच मैं मीच न नीचहिं सूझत मोह की कीच के बीच फँस्यो है
गुनगाहक सों बिनती इतनी हकनाहक नाहिं ठगावने है ।
यह प्रेम बजार के अन्तर सो पर नैन दलाल अँकावने है ॥

---

* अद्धर = निराधार ।

कहि ठाकुर औगुन छोड़ सबै परवीनन तै परखावने है।
अब देखि बिचार निहारि कै माल जमा पर दाम लगावने है॥

हिलमिल लीजिये प्रबीनन सों आठो जाम,
कीजै वह काम जासों जिय को अराम है।
दीजिये दरस जाको देखिबे की साध होइ,
कीजिये न नीच साथ नाम बदनाम है॥
ठाकुर कहत कछू चित मैं बिचारि देखौ,
गरब गरूरी को रखैया एक राम है।
रूप सो रतन पाइ जोबन सो धन पाइ,
नाहक गँवाइबो गँवारन को काम है॥ २२॥

कैसी करौं कासों कहौं जानत न कोऊ भेद,
भेद जानिबे की करी कोटि चतुराई मैं।
साँचौ ह्वै कै सौंह दै कै निज परतीत कै कै,
उनहीं सिखाई सीख सोई ठहराई मैं॥
ठाकुर कहत प्रीति रीति सरसाइ हिये,
मोद उपजाइ महा ममता बढ़ाई मैं।
हिलि मिलि भाँति भाँति हेत करि देख्यो तऊ,
चेटकी चबाइन के पेट की न पाई मैं॥ २३॥

दस बार बीस बार बरज दई है याहि,
एते पै न मानै जो तौ जरन बरन देव।
कैसौ कहा कीजै कछू आपनो करौ न होइ,
जाके जैसे दिन ताहि तैसेई भरन देव॥
ठाकुर कहत मन आपनो मगन राखौ,
प्रेम निरसङ्क रस रङ्ग बिहरन देव।
बिधि के बनाये जीव जेते हैं जहाँ के तहाँ,
खेलत फिरत तिन्हैं खेलन फिरन देव॥ २४॥

जाने जौन काज को अरंभ कर दीन्हों ताको,
　　तौन काज कहा बिन भये लटकत है।
कहा करौं कहां देखौं बावड़ो ह्वै जात मन,
　　चिंता को प्रवाह जब आन झटकत है।
ठाकुर यौं मन समुझायो करै बार बार,
　　मानत है नाहीं या वृथा ही भटकत है।
ऐसो कहा कोऊ हीन बंधु अटकत जैसो,
　　हीन के भये ते दीनबंधु अटकत है॥ २५॥

सवैया।

आइ अगीत पछीत दई निसि टेरत मोहिं सनेह के कूकन।
जानत हैं कि न जानत हैं कोई यौं न जरै नर नारि सरूकन॥
ठाकुर हौं न सकौं कहिकै अब का कहिये हरि सों यह चूकन।
देखि उन्हें न दिखाइ कछू ब्रज घूरि रह्यौ चहुँओर चहूँकन*२६

नेत्र वर्णन

डीलदार सीलदार लाज को अहार जिन्हैं,
　　तीछन मृगा से देख देख रहियत है।
मीन और खञ्जन से अलसे अनोखे देखे,
　　कञ्जदलहू तें ये विशेष चहियत है॥
ललित ललौहैं, कसकौहैं चसकौहैं जान,
　　ठाकुर कहत सुख पाइ रहियत है।
औरन के नैन कहा नैनन के लेखे आवैं,
　　ऐसे नैन होंइ तब नैन कहियत है॥ २७॥

---

*बदनामी की चर्चा।

कटाक्ष वर्णन

(सवैया)

तान लगे तरवार लगे बरछी हु लगे लगे तीर अन्यारो।
बज्र को घाव लगे ते जियै औ जियै विष बाउ पिये मतवारो॥
ठाकुर जीवत सर्प डसो अरु जीवत है नरसिंह बिदारो।
काल ग्रसे पै जियै जू जियै न जियै इक नैन कटाक्ष को मारो॥
बांकी बनैत पटैत दिवानिन है कमनैत बड़ी सुघरै री।
देत न पीठ बसीठ बसीठिन चाहत देन सुदीठि करे री॥
ठाकुर चोट न चूकत कैसहुं ऐसहुं होत हैं ढीठ करे री।
रोक री रोक करैयां कहा कजरारे कटाक्ष कटा से भरे री॥२६॥

मरद मुछारे गभुवारे जौन होनहार,
तेऊ झूमि-झूमि मतवारे से परे रहैं।
कोऊ घाट बाट कोऊ चौहट अथाइन मैं,
कोऊ पौंर खोरिन में ऊसई धरे रहैं।
लागत ना दारू उपचार करि हारे बैद,
ठाकुर कहत ऐसे हिय में अरे रहैं।
एक दस सौ लौं औ सहस्र लौं कहां लौं कहौं,
आंखन के मारे कैयो लाखन डरे रहैं॥२०॥

बाँके नैन बान मारि घायल कियो री मोहि,
घायल दृगा के देत हाय जिन्हैं गाइये।
एरी बीर प्रीति को न दूसरो तबीब कोऊ,
जाके द्वार धाय जाय दरद सुनाइये।
ठाकुर कहत कहूँ चोट को न चिन्ह कछू,
बिन देखे नैन चैन पलहू न पाइये।
एक जागा होय तहां औषधि लगाऊं बीर,
रोम रोम पीर कहां औषधि लगाइये॥२१॥

रूप वर्णन

देखत ही चित लेइ चुराइ सु या ब्रज माँझ सुनी चरचा इक ।
तातैं गई चलि नंद के मन्दिर देखन नैनन को सुखदाइक ।
ठाकुर को सुखमा बरनै अरे काम लगै जिनको छबि-पाइक ।
काहे न जाइँ सबै ब्रज देखन साँचहूं साँवरो देखबे लाइक ॥३२॥

येई हैं वे वृषभानुसुता जिनसों मनमोहन मोह करै हैं ।
कामिन तो उन सी नहिं दूसरि दामिन की दुति को निदरै हैं ॥
ठाकुर कै हमहीं यह जानतीं कै उनहूँ को जनाइ परै हैं ।
छोटी नथूनी बड़े मुतियान बड़ी अँखियान बड़ी सुघरै हैं ॥ ३३॥

दीखती तो ललितादि जहां तहां हौंहू गई दबि पांवन गाढ़े ।
चाह भरे मुख चन्दन सों चितवैं चहुँ चित्र मनो लिखि काढ़े ॥
ठाकुर को घट को बढ़ है निरधार करैं अनुरागन बाढ़े ।
कुञ्ज के भौन में पुञ्ज प्रभान किशोर किशोरी बराबर ठाढ़े ३४॥

सुरझी नहिं केतो उपाइ कियौ उरझी हुती घूंघट खोलन पै ।
अधरान पै नेक खगीही हुती अटकी हुती माधुरो बोलन पै ॥
कबि ठाकुर लोचन नासिका पै मड़राइ रही हुती डोलन पै ।
ठहरै नहिं डीठि फिरै ठठकी इन गोरे कपोलन गोलन पै ॥२५॥

धन्य बिधि तेरी रचना को है न पारावार,
देखि देखि बिबिध बखान कीजियतु है ।
कोई रचे क्रूर कोई सुघर कुरूप कोई,
कोई रूपवन्त औ बड़ाई दीजियतु है ॥
ठाकुर कहत रस रूप रङ्ग न्यारे न्यारे,
न्यारी न्यारी प्रकृति बिचारि लीजियतु है ।
बाजे बाजे मानुषन देखे सुने भावत सु,
बाजे बाजे मानुष न देखे जी जियतु हैं ॥ ३६ ॥

रूप अनूप दियो करतार तो मान किये न सयान कहावै।
और सुनौ यह रूप जवाहिर भाग बड़े बिरले कोउ पावै।
ठाकुर सूम के जात न कोऊ उदार सुने सबही उठि धावै।
दीजिय ताहि दिखाय कृपा कर जो कोउ दूर ते देखन आवै॥

रूप विषय

(घनाक्षरी)

ये ई हिय द्वार के कदीम दरबान दोऊ,
इनहिं छिपाय कैसे ऊपरी लयो है री।
हौं तो इन दोइन के रहत भरोसे हाय,
बारी खेत खायौ बड़ो उलट भयो है री।
ठाकुर कहत बूझे' आँसू भरि भरि देत,
नेक हू न सोध देत कौन को दयो है री।
मेरो मन मेरी आली मोहि यह जानी जात,
नैन बटपारन के भेद में गयो है री,॥ ३८॥
मोही मैं रहत रहैं मोही सों उदास सदा,
सीखत न सीख तन सीख निरधारो है।
चौंकौ सो चको सौ कहूँ जक सौ जकोसौ कहूं,
पाइन थको सौ भाँति भाँतिन निहारो है।
ठाकुर अचेत चित चोजवारी बातन मैं.
जानत न हरि सों कहा धौं बोल हारो है।
ऐसो चित चतुर सयानो सावधान मेरो,
ये री इन आँखिन अजान करि डारो है॥ ३९॥

संयोग वर्णन

राधिका स्याम लसे पलका पर का पर जाति कही छबि हालकी।
आपने हाथ से भावती लैकर प्रीतिसे आँजुरी जोरी गोपाल की।

ठाकुर तापै धरो मुख बाल नै को बरनै उपमा वहि काल की।
पानन में तिय आनन यों छिपै चन्द चढ़ो मनो कंजकीनालकी॥
अपने अपने निज गेहन में, चढ़े दोऊ सनेह की नाव पै री।
अँगनान में भीजत प्रेम भरे समयो लखि मैं बलि जावँ पै री।
कह ठाकुर दोउन की रुचि सों रँग ह्वै उमड़े दोउ ठाँव पै री।
सखी कारी घटा बरसै बरसाने पै गोरी घटा नँदगाँव पै री।

अनुराग

घरही-घर घैरु करैं घरिहाइनै नांव धरैं सब गाँवरी री।
तब ढोल दै दै बदनाम कियौ अब कौन की लाज लजाँवरी री॥
कवि ठाकुर नैन सो नैन लगे अब प्रेम सों क्यों न अघाँवरी री।
अब होन दै बीस बिसैरी हँसी हिरदै बसी मूरति साँवरी री॥४२॥
जब तैं दरसे मनमोहन जू तब तै अँखियाँ ये लगीं सो लगीं।
कुलकानि गई भगि वाही घरी ब्रजराज के प्रेम पगीं सो पगीं॥
कवि ठाकुर नेह के नेजन की उर मैं अनी आन खगीं सो खगीं।
अब गांव रे नाँव रे कोई धरौ हम साँवरे रंग रगीं सो रगीं ४३॥
ऐसे कबौं कहा कारज होत है जो मग माँझ कबौं दरसाने।
ये दिन ऐसे ही बीतत हैं हमहूँ तरसीं तुम हूँ तरसाने।
ठाकुर और बिचार कछू नहिं ये अभिलाख हिये सरसाने।
कै हमही बसिबे नँदगाँव की आपही आय बसौ बरसाने॥४४॥
वा निरमोहिन रूपकी रासि ओऊ उर हेत न ठानति ह्वै है।
बार हूँ बार बिलोकि घरी घरी सूरत तो पहिचानति ह्वै है।
ठाकुर या मन की परतीत है जो पै सनेह न मानति ह्वै है।
आवत हैं नित मेरे लिये इतनो तो विशेष कै जानति ह्वैहै॥४५॥
कहते न बनै कछुवै चहुँघाँ लबकी सब भाँति बनै सहते।
घर बाहर घैरु उठो री भटू मनमोहन लालन के चहते।

कह ठाकुर हाथ चलै गहिये अरी जीभ चलै न बनै गहते।
सखि या नंदगाँव को कौतुक री लखते ही बनै न बनै कहते॥
भावती रूप महाछबि छाजती आवती आनँद सौं झिलती हौ।
बूझती याते सनेह कथा कछू प्रेमके पन्थन मैं पिलती हौ॥
ठाकुर एक दिना हित हौंसन काहे न आन हिये हिलती हौ।
चन्द से आनन को हौ कहो ? नितही हमकौं इतही मिलतीहौ॥
रोज न आइये जौ मनमोहन तौ यह नेक मतौ सुन लीजिये।
प्रान हमारे तुम्हारे अधीन तुम्हें बिन देखेंसु कैसे कै जीजिये।
ठाकुर लालन प्यारे सुनौ बिनती इतनी पै अहो चित दीजिये।
दूसरे तीसरे पाँचयें सातयें आठयें तो भला आइबो कीजिये॥
का करिये तुम्हरे मन को जिनको अब लौं न मिटो दगा दीबो।
पै हम दूसरो रूप न देखिहैं आनन आन को नाम न लीबो।
ठाकुर एक सो भाव है जौ लगि तौ लगि देह धरे जग जीबो।
प्यारे सनेह निबाहिबे को हम तो अपनो सो कियो अरु कीबो।
यारही जात लखो कुँवना तब धीरज नेक नहीं धरती है।
आपनी देखि घिनोची भरी मिस ठानि परायो कहो करती है।
ठाकुर मानती नाहीं कहो घर जात पराये नहीं डरती है।
रीति की रौसन आपनी हौंसनि पानी परोसन को भरती है।
हौं करिहौं हित फूलौ फिरै मन जानत नाहीं अजान है येतौ।
या पथ पांव धरै पहिचान अहै इहमैं दुख औ सुख केतौ।
ठाकुर जो या कथा सुनि पावतो तौ सुनिबे कहँ कान न देतौ।
जानतौ जौ इतनी परतीत तौ प्रीति को रीति कौ नाम न लेतौ॥
कालिह कहूँ हँसी बोली गोपाल सों जानि न जाइ कहा कहो कौनें!
ता छिन तैं कछु बावरी सी भई ए सखी साध रही गहि मौनें।
ठाकुर तैं फिरि आई बुलावन कै तुहिं हेरत श्याम सलौनें।
जाइ इते पर जो मिलि बैठिये तौ फिर पैठिय कौन के भौनें।५२।

चौचँदहाई जरैं ब्रज की जे परायो बनो हर भाँति बिगारैं।
काहू की बेटी बहून की ह्वैह किते घर जाय कमंध से पारैं।
ठाकुर या बिसवास की हौस न आठहू गांठ रही है हमारे।
वे करे पै या करैं करनी करि आवै कहूँ तो कहा कर डारैं॥५३॥
दिल साँचो लगै जेहिको जेहिसों तेहिको तितही पहुँचावत है।
बलि हंस चुनै मुकताहल कों अरु चातक स्वाति को पावत है।
कबि ठाकुर यों निजु भेद सुनो अरुझावत सो सुरझावत है।
परमेसुर की परतीत यही मिल्यो चाहत ताहि मिलावतहै॥
गति मेरी यही निसबासर है चित तेरी गलीन के गाहने है।
चित कीन्हों कठोर कहा इतनो अरी तोहिं नहीं यह चाहने है॥
कह ठाकुर नेक नहीं दरसीं कपटीन को काह सराहने है।
मन भावें सुजान सोई करियो हमैं नेह को नातो निबाहने है॥

एतो ब्रजमंडल बसत तासों काम कौन,
आनँद के भौन तुम्हैं देखि जी जियतु है।
सोऊ तुम इतै उतै अनत पनत हेरो,
याही दुःख दाहन सरीर छीजियतु है।
ठाकुर कहत मेरी चाह की अचाह करौ,
चाहते को चाह की निबाह कीजियतु है।
प्रीति बिनु प्यारे कोऊ काहे को परेखो देइ,
प्रीति की प्रतीत को परेखो दीजियतु है॥५६॥

बिन आदर पाय कै बैठि ढिगां अपनो रुखदै रुख लीजतु है।
अपमान को मान परेखो कहा अपने हित पै चित दीजतु है।
कवि ठाकुर काज निकारिबेको नित कोटि उपाय करीजतु है
अपनी उरझी सुरझायबे को सबही की खुसामति कीजतु है।
ठाढ़े रहैं घनश्याम उतै इत मैं पुनि आनि अटा चढ़ि झांकी।
जानति हौ तुमहू ब्रज रीति न प्रीति रहै कबहूँ पल ढाकी॥
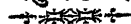
ठाकुर कैसहुँ भूलत नाहिनै ऐसी अरो वा बिलोकनि बाँकी।
भावत ना छिन भौन को बैठिबो घूँघट कौन को लाज कहां की।५८।
काहु के होइ तो कोउ कहै निज जैसे मनै लगी तैसे सिखाये।
ज्यों ज्यों खरो हटको इन लोगन त्यों त्यों खरे बिगरैं ये सवाये॥
ठाकुर काहु रुचै न तौ का करौं मोहि तौ ऐसे लगे भले भाये।
नैन हमारे हमारे मनै लग्यौ चाहैं जहांई तहांई लगाये॥ ५९॥
अबका समझावतीको समझै बदनामीके बीजन बो चुकी री।
इतनोहूँ विचार करौतोसखी यह लाजकी साजतो धो चुकीरी।
कवि ठाकुर काम नथा सबको करि प्रीति पतिव्रत खो चुकीरी।
नेकी बदी जो लिखी हुती भालमें होनी हुतीसु तो होय चुकीरी
घर बाहर पास परोस के बैर अकेले कवै कर पैयत है।
मग मांझ कजात मिले सजनी तो बिलोकत चित्त डरैयत है॥
कह ठाकुर भेंटबे के उपचार बिचारत धौस बितैयत है।
बतियां न बनैं जिनसो कबहूं छतियां तिन्हैं कैसे लगैयत॥है६१।

कैसो पीत पटवारो छोर छहरत जात,
उलटी मुरलि लोंसे अंग अलसानो सो।
लटपटे पेचन की बाँधे अटपटी पाग,
नटखटी नंदको निकाइन निकानो सो।
ठाकुर कहत हित हौंस अभिलाषन सों,
बित्त को बिसारि चित्त चारु चकवानो सो।
लेखु धन्य भाग सोभा सुखन बिसेष देख,
गोरी को गुबिंद फिरै देखत दिवानो सो।६२।
को हौ? जोतिषी हैं। कछू जोतिषै बिचारत हौ?
येही शुभ धाम काम जाहिर हमारो तो,
आओ बैठ जाओ पानी पियो पान खावो फेर,
होय कै सुचित नेक गणित निकारौ तो।

ठाकुर कहत प्रेम नेम को परेखो देखि,
इच्छा की परिच्छा भली भाँति निरधारो तो।
मेरो मन मोहन सों लागत है भाँति भाँति,
मोहन को मन मो सों लागिहै बिचारो तो ॥ ६३ ॥

जोतिषी बिचार कहै राधिका जू सुनौ बात,
मोको गति जानि परै तेरे निज श्याम की।
डोलत ही खोर खोर हेरत तिहारी ओर,
तेरो बोल सुने गैल भूलि जात धाम की।
ठाकुर कहत काम काज ना सोहात कछू,
बाढ़ो रस प्रेम भूली बात सबै जाम की।
जैसी रट तोहि लगी राधे श्याम सुन्दर की,
तैसी रट वाहि लगी राधे तेरे नाम की ॥ ६४ ॥

यह को है कहां को न जानियै चीन्हिये नित्तहि मो मग घेरत है।
ब्रज में यह रीति कुरीति चली, यह न्याउ न कोउ निबेरत है।
नख ते शिष लौं तन ताकि रहै एजू ऐसे कहा कोउ हेरत है।
मुरली में है नाम सुनाय सखी, मोहिं राधिका २ टेरत हैं।

वियोग वर्णन।

रूपमान सुन्दरी सुजान कान दै कै सुनौ,
नानवारे लोगन में महिमा वजन की।
वेदन पुरानन प्रमानन सुनी है बात,
सुख की सुहाती कीजै सबही के मनकी ॥
ठाकुर कहत जात आवत न जानी जात,
एकही सी रीति निरधारी तन धन की।
हेर लीजै हँसि लीजै हिल लीजै मिल लीजै,
कुरस [illegible] कीजै चाहते के मन की ॥६६॥

आजु यहि कौतुक छको है नंदनंद बीर;
बरनो न जात सो विचित्र चित्र मोपै री।
चलु बलि तोहि यों दिखाय लाऊँ बन घनो,
पायो है निहार बलिहार भयो सो पै री॥
ठाकुर कहत कहां नीलमणि सोनबेलि,
सुखमा सकेलि कै न उपमा अरोपै री।
घनको निहारै तब वारै होत आपुन पै,
बीजुरी निहारै तब वारै होत तोपै री॥६७॥

बरुनीन मैं नैन झुकै उझकैं मनौ खंजन प्रेम के जाले परे।
दिन औधि के कैसे गनौं सजनी अँगुरीन के पोरन छाले परे॥
कवि ठाकुर ऐसी कहा कहिये निज प्रीत करे के कसाले परे।
जिन लालन चाह करी इतनी तिन्है देखिबे के अब लाले परे॥
लगी अन्तर मैं करै बाहिर को बिन जाहिर कोउ न मानतु है।
दुख औ सुख हानि औ लाभ सबै घरकी कोउ बाहर भानतु है
कवि ठाकुर आपनि चातुरी सों सबही सब भांति बखानतु है।
पर बीर मिले बिछुरे की बिथा मिलिकै बिछुरै सोई जानतु है

आगी बीच दैके कहुं दारू-गज दाबे जात;
पानी बीच दैके कहुँ मीन जीजियतु है।
काम बीच दैके कहूँ बाम सो वियोग होत,
[illegible] बीच दैकै कहूँ जोग लीजियतु है॥
ठाकुर [illegible] री तुमही बिचारि देखो,
[illegible] रूप पाइ कहूँ मान कीजियतु है।
पीठ दैकै बैठनी हो पीठऊ पै बेनी परी,
बेनी बीच दैकै कहूँ पीठ दीजियतु है॥७०॥

सवैया ।

का कहिये परी नेह अधीन रिसान दे लोग रिसानो ई सो है ।
और कहा कहिहैं कहि लेन दे नाम बुरो तौ बखानो ई सो है ।
ठाकुर याकी है मोहिं प्रतीत सो बैर सबै रिस मानो ई सो है ।
वा घनश्याम अकेले बिना सिगरो ब्रज बीर बिरानो ई सो है।७१

काहे अरे मन साहस छाँड़त काहे उदास हो देह तजै है ।
वे सुख वे दुख आये चले गये एक सी रीति रही नहि रैहै ।
ठाकुर काको भरोस करैं हम या जगजालन भूल न पैहै ।
जानें सँजोग मे दीन्हों बियोग २ में सो का सँयोग न देहै ।७२।

अरे लाल सनेही सनेह तजौ सजौ बैर तऊ सुधि लीजतु है ।
हम आनन आन निहारोई ना जपि नाम तिहारोई जीजतु है ।
कवि ठाकुर भूल कछू अपनी तिहि तै तुम्हैं दोष न दीजतु है ।
चित आन की आन कही चहै पै हित जान अईगई कीजतु है ।७३।

का कहिये कोई पीरक नाहिनै तातैं हिये की जतैयत नाहीं ।
भागन भेट भई कबहूँ सु घरीकु बिलोकैं अघैयत नाहीं ।
ठाकुर या घर चौचँद को डर तातैं घरी घरी पैयत नाहीं ।
भेंटन पैयत कैसे तिन्हैं जिन्हैं आँखिन देखन पैयत नाहीं ।७४॥

जा दिन जान लगे परदेस कौं रौंदि हियो छतिया पै गली करी ।
औध को आस बताई दगा करि राखि गये फिर स्वाँस चलीकर
ठाकुर आप महा सुख लूटत बावरी सी बृषभानललो करी ।
सोहत है तुमको सबही सु भले जू भले लला आपु भली करी।७५

मेरी कही कर मो जिय बावरे तोसों कहौं हौं सनेह के नाते ।
एक दिना भगवान सु आइहैं को कहिहै सुख सौं मुख बातैं ॥
ठाकुर फेरि जुदे जुदे होंयगे देखु बिचार कहां मैं कहाँ तैं ।
झेलो वियोग के ये उझिला निकसै जिन रे जिअरा हिअरा तैं।७६।

कौन गुनाह परो हम सो अबलौं घनस्याम निहोरितु है ।
जो अपनी हितकारी महा तिन सौं कहूँ डीठि मरोरितु है ।

ठाकुर आप सयाने बड़े मन मानिक पाय न कोरितु है।
यह प्रीत की रीत सुनो हमपै करि प्रीत नहीं फिर तोरितु है॥७७॥
का कहिये किहि सौं कहिये तन छीजत है पै न छीजतु है।
तन को बिसराम अराम घनो करि दीजतु है पै न दीजतु है।
कवि ठाकुर भोग सँयोग सबै सुख कीजतु है पै न कीजतु है।
मनभावन प्यारे गोपाल बिना जग जीजतु है पै न जीजतु है॥७८॥
दहने परो देह बियोग बिथा अब आज लौं काहू दही नइयाँ।
कहने परी लाजहि छाड़ इती जिती कौनहूं ठाँव कही नइयाँ।
कवि ठाकुर लाल अचारि करी तिहि तैं सहिये जु सही नइयाँ।
मनमोहन को हिलबो मिलबो सपने लौं भयो हमरो गुइयाँ॥७९॥
तन को नरसाइबो कौने बचौ मन तौ मिलि गो पै* मिलै जल जैसो
उनसे अब कौन दुराव रह्यो जिनके उर मध्य करो सुख ऐसो।
ठाकुर या निरधार सुनौ तुम्हैं कौन स्वभाव पर्‍यो है अनैसो॥
प्रानपिआरो सुनो चितदै हिरदै बसि घूंघट घालिबो कैसो॥८०
सजनी कहा ठाढ़ी भई सुचिती चल देखिये कौन के गोहन गो।
वह बेनु बजाइ रिझाइ हमैं अब धेनु कहूं बन दोहन गो॥
कवि ठाकुर ऐसहि जानि परी अरी गुंज के हारन पोहन गो॥
कोऊ टेरियो फेरियो री वा अहीर को मोहन मोमन मोहन गो
जिहि भाँति निहारत आनि हते तिहि भाँति निहारतही नहियाँ
फिरि का तिनसौं चित दै मिलिये हित कै अवगावतही नहियाँ
कवि ठाकुर का तिनसौं कहिये करि नेह निबाहतही नहियाँ॥
अब जान परो इनकी हमकौं हमको हरि चाहतहो नहियाँ॥८२॥
दिन बीतक तीजक ते यह खोर ह्वै धेनु उबेरतु ही नहियाँ।
फिर कुञ्ज के भौन बजाइकै बाँसुरी प्यारी को टेरत ही नहियाँ
कवि ठाकुर सोच इतो चित को इत को पग फेरत ही नहियाँ॥
यहि ओर सनेह की आँखिन सौं अब तो हरि हेरत ही नहियाँ॥

* पै = पय = दूध।

काठ तें एतो कठोर भयो जाइ वा दिन कोरे हुते मधु माखन।
बातें बनाइ कहैं डरकै मिलकै बिछुरे उड़िके बिन पाँखन॥
ठाकुर वे न सँदेसो लिखैं चलि आवत हैं उत तैं नर लाखन।
जु कियो बदनाम सबै ब्रज में अब आँखैं लगाइ दिखात न आँखन॥

जब तें बिलोकि गईं रावरो बदन बाल,
तब तें अचेत सी बियोग झार झुरई।
हेम की लता सी चपला सी चारु चांदनी सी,
मदन सताई पै न मैं जमाई भुरई।
ठाकुर कहत भूमि बिकल बिहाल परी,
देखिये गोपाल ताहि उपमा न जुरई।
रति के भँडार ते दुराय कै चोराय मानो,
काहू आनि मंदिर में रूप रासि कुरई।८५॥

का कहि बाल गोपालहिं बोधहिं तो दृग वान अमान लगे री।
तो हित प्यारी भये बदनाम अराम बिसार दिये घर के री।
ठाकुर तू न तऊ पिघली पग पारे हैं लालन बार घने री।
प्रीतम की सु भई गति या छतिया कसकी न कसाइन तेरी।

स्वप्न दर्शन

सापने हौं फुलवाई गई हरि अंक भरी भुज कंठन मेली।
हौं सकुची कोउ सुन्दरी देखत लै जिन बांह सों बांह पहेली।
ठाकुर भोर भये गये नींद के देखहुँ तो घर मांझ अकेली।
आंख खुली तब पास न सांवरो बाग न बावरो बृच्छ न बेली।

बसन्त

मौरन लगे हैं आम द्रुमन पलास पुनि,
बहत बयारि आठो जाम निरदई है।
धाम धाम धकधक परति वियोगिनी जै,
बिरह वियोग अङ्ग अङ्ग निरसई है॥

ठाकुर कहत घसि बालम बिदेस रहे,
लिखत संदेसौ यह रीत नई लई है।
लीजिये खबर प्यारे कीजिये गहर निज,
अब रितुराज की अवाई आन भई है॥ ८८॥

आओ चलौ देखिये जू लेखिये जनम धन्य,
केसर गुलाल सों सरीर साधियतु है।
और मैं कहां लौं कहौं नाम नर नारिन के,
दुःख ते निकासि सुःख भौन धांधियतु है।
ठाकुर कहत उन्हैं साँवरो दिखावने है,
ताते हम बातन को ब्यौंत नाधियतु है।
प्रेम को न अंत है महंत है मनोज आज,
राधिका के कंतहि बसन्त बांधियतु है॥८९॥

गावैं पिकबैनी मृगनैनी हू बजावैं बीन,
नाचैं चन्द्रमुखी चारु चाउ की चटक पै।
कीरतिकुमारी वृषभान की दुलारी राधे,
अटकी बिलोकि लोक लाज की अटक पै।
ठाकुर कहत चीर केसर के रंग रँगो,
अतर पगो सो मन मोहै पीत पट पै।
देख तो देखात कैसौ राजत रसीलो आज,
आली री बसंत बनमाली के मुकट पै॥९०॥

बौरे रसालन की चढ़ि डारन कूकत कोलिया मौन गहै ना।
सीतल मंद सुगन्धित बीर समीर लगे तन धीर रहै ना॥
ठाकुर कुंजन पुंजन गुंजत भौरन को चै* चुपैबो चहै ना।
ब्याकुल कीन्हो बसंत बनाय कै जाय कै कन्त सों कोऊ कहै ना।

*चय, समूह

आम मौर झौरैं मौरझौरन पै झूमैं अली,

बिकल बियोगन की तापन नवाई मैं।

बरनी न जाति बन महिमा कहां लौं कहौं,

करनी बिचार भई शोकित सवाई मैं॥

ठाकुर कहत होती ता छिन पठाई पाती,

छाती मैं उमङ्ग करौं कौन चतुराई मैं।

धन्य बनिता हैं सुर बनिता सराहैं ते जे,

कन्त घर पाइहैं बसन्त की अवाई मैं॥ ९२॥

पत्र बन बेलिन के किसलै कुसम देखु,

बन बन बाग ये छबीले छबि छावने।

कोकिला की कूक सुनि हूक होत कैसी देखु,

ऐसे निसि-बासर सु कैसे के गँवावने॥

ठाकुर कहत हिये बिसद बिचारु देखु,

ऐसे समै स्याम हू कौं नाहिं तरसावने।

आम पर मौर देखु मौर पर भौंर देखु,

भौरन पै भौंर देखु गुंजत सुहावने॥ ९३॥

होरी वर्णन।

रंग सौं मांचि रही रस फाग पुरीं गलियां त्यौं गुलाल उलीच मैं

जाय सकैं न इतै न उतै सो फिरे नर नारि सनेह रगींच मैं

ठाकुर ऐसो उमाह मचो भयो कौतुक एक सखीन के बीच मैं।

रंग भरी रस माती गुवालि गोपालहिं लै गिरी केसर कीच मैं।

फाग।

फागुन के औसर अनोखे बन बानिक ह्वै,

लीन्हे ग्वालबाल स्याम फाग आइ जोरी है।

पाइ सुधि डगरी नवेली राधिका के संग,

रङ्ग लै उमङ्ग अङ्ग अङ्ग बैस थोरी है॥

ठाकुर कहत प्यारो श्याम तन हेरि हेरि,
मुरि मुसक्यात ठाढ़ी कुँवरि किशोरी है।
दौरीं लै गुलाल ब्रज बाल चाख्यो ओरन तैं,
होरी लाल होरी लाल होरी लाल होरी है ॥६५॥

फाग।

होरी को होंस हमैं ना कछू हम जानती हैं तुम रार करैया।
फूलौ न मोहि अकेली निहारि कै भूलियो ना तुम गायचरैया॥
ठाकुर जो बरजोरी करौ तुम हौं हूं नहीं कछु दीन परैया।
फारिहौ काहू की आँख ललारहौ नोखे गोपाल गुलाल डरैया।

दृग मूँदि कै अंचल सों कहतीं पिचकारी हमारी सखी गहियो।
अब बोलिहौ तो रिसियैहौं सुनो फिर रोझकु रीझ कछू कहियो॥
कवि ठाकुर कोजे फिराद कहा यह लाज हमारो तुही लहियो!
मेरी आँखिन माँझ गुलाल गयौ अब लाल हहा रहियो रहियो॥

डाख्यो जो गुलाल रङ्ग केसर को अङ्ग अङ्ग,
आन झकझोख्यौ मीड़ौ दौर मुख रोरी मैं।
चाहि चितवारी हितवारी नितवारी करी,
काहे कहौ कौन अब जैहै ब्रज खोरी मैं॥
ठाकुर कहत ऐसे रस में निरस होन,
कहा भयो छाती जो छबीले छुई चोरी मैं।
अङ्क भरि लीनी तो कलङ्क की न सङ्क कीजै,
आज बरजोरी कौ न दोष होत होरी मैं ॥६८॥

ठाढ़ौ रहौ न डगौ न भगौ अब देखन देव जू कौतुक ख्यालहिं।
गावन देव बजावन देव जू आवन देव जू नन्द के लालहिं॥
ठाकुर त्यों रँगिहौं रँग सों अरु मारिहौं बीर अबीर गुलालहिं।
घूंघर की घुमकी मैं धमारि मैं हौं धँसिहौं धरि लैहौं गुपालहिं।

एकन की कंचुकी चुपर चारु चोवन सों,
 एकन की आंखन गुलाल मूठ मेलै है ।
एकन के संग नाचै गावै सङ्ग एकन के,
 एकन के संग उर आनँद सकेलै है ।
ठाकुर कहत सहै एकन की गारी लाल,
 एकन की पिचकारी अंगन पै झेलै है ।
मोहि कत लीन्हे जात बावरी सी उतै जितै,
 कान्ह रंगरातो रसमातो फाग खेलै है ॥१००॥

जानि झुकामुकी भेख छिपाय कै गागरी लै घरसे निकरी ती ।
जानो नहीं मैं कबै केहि ओर ते आय जुरे जहां होरी धरी ती ।
ठाकुर दौरि परे मोहिं देखत भागि बची जू कछू सुघरी ती ।
बीर जो द्वार न देहुँ केवार तो मैं होरिहारन हाथ परी ती ।१०१।

अखती वर्णन ।

सवैया ।

अखती रची राधिका मोहन सों बरजोरिहि नाम लेवावती हैं ।
झहरावती भौंह झुकावती फेर कहौ जू कहौ जू सुनावती हैं ॥
कह ठाकुर काम-गुरू के कहे उपमान के ओप बढ़ावती हैं ।
रस रीति के प्रीति के प्रीतम को बिसरे मनो पाठ पढ़ावती हैं ॥

लांबी लचकारी लौद लीन्हे हौ गोपाल लाल,
 सो न घाल दीजो घाले घनो रस घटहै ।
छ्वी जो जैहै काहू ब्रज बनिता नवेली अङ्ग,
 ऐंड़ की तिहारी कान्ह एकहू न सटहै ।
ठाकुर कहत टेक एकहू न रैहै धरी,
 सङ्ग में सहेली एक एक तें बिकट है ।

मेरे लग जैहै तो दोहाई वृषभान जू की,
ऐसी लौद घालिहौं कि चौवर उपटहै ॥१०३॥

अखती की तीज तजबोज कै सहेली जुरीं,
बर के निकट ठाढ़ीं भावते को घेर कै।
एक बेर समिट सम्हार सबही पै सब,
बोदर चलाई मनभाई हेर हेर कै ॥
ठाकुर कहत जब मुरकीं लली की ओर,
लौदन लफाइ कह्यो लीजै नाम हेर कै।
स्याम कौ बुलाइ पिय पाइ कै सुनायो मुख,
स्याम स्याम स्यामा सों कहायो बीस बेर कै॥१०४॥

गांठ गँठीली चमेली की बोदर घालो न कोऊ अनूनरी कैहै।
ऊसइ नाम लेवाओ तो लैहैं पै घाले ते लाल कहा रस रैहै।
ठाकुर कंज कली सी लली बलि या जड़ चोट सरीर न सैहै।
बाल कहै कर जोर हहा यह बोदर लाल हमें लग जैहै ॥१०५॥

---

* अखती = बैशाख सुदी तीज (अक्षय तृतिया)। इस दिन बुँदेलखण्ड में किसी बट वृक्ष के नीचे स्त्रियां पुत्तलिका पूजन करती हैं। पुरुष भी सज बज कर पूजन देखने जाते हैं। वहां पर पूजनोपरांत ऐसा होता है कि अपने अपने सम्बन्ध और प्रेम के अनुसार स्त्रियां पुरुषों से उनकी प्रियतमा का नाम पूछती हैं। पुरुष भी स्त्रियों से उनके पतियों वा उपपतियों का नाम पूछते हैं। प्रेम वश वा हास्य हेत नाम कहने में संकोच करते देख कर मुलायम मुलायम गुलाब व चमेली की छड़ियों से परस्पर आघात भी करते हैं। यही वर्णन इस कविता में है।

पुतरीन पुन्नाय किसोरी सुजान सखीन समाज लिये उमही।
ब्रजचन्द बिहारी बिराजो जहां अखतो करी यों सुखपाय महो।
कह ठाकुर लाल के आगे खड़ी ललिता धरि अञ्जुलि जोरि रही
मुसकाय मनोहर स्याम हरैं सुख साधा पुजावन राधा कही १०६

पावस वर्णन।

आग सी धँधाती ताती लपटैं मिराय गईं,
पौन पुरवाई लागी सीतल सुहान री।
मृदुल अनूप चारु चाँदनी मलीन भई,
तापै छाँह छाँई छूटो मानिनी कौ मान री।
ठाकुर कहत आली ग्रीषम गवन कीनो,
पावस प्रवेस बेन छवि सरसान री।
सावन सुहावन को आवन निरखि आली,
मेघ बरसन लागे हिय हुलसान री ॥१०७॥

सवैया।

बीतो बसंत मिलो नहिं कंत सो आनंद में तिय कौलौं भरैगी।
जेठ हु ज्वालन से जरि कै तन कामिनी काम सों कौलौं लरैगी।
ठाकुर जो पै न आइहैं श्याम अराम को कौन उपाय करैगी।
खाय दरार रही छतिया यह बूँद परे अरराय परैगी ॥१०८॥

सननात अँध्यारी छटा छननात घटा घन की अरी घेरती सी।
झननात झिली सुर सोर महा बरही फिरैं मेघन टेरती सी॥
कबि ठाकुर वे पिय दूर बसैं तन मैन मरोर उरेरती सी।
यह पीर न पावति आवनि है फिर पापिनी पावस पेरती सी।

घूमैं घटा छटा छूटती हैं उलहे द्रुम बेलिन पत्र नये।
सो हरी हरी भूमि मैं इन्द्रबधू कँटिआइबे कौ जनु बीज बये।

कवि ठाकुर यातैं प्रतीत भई परदेसी कऊ कोऊ आइ गये ।
अब सांझ सबेरे कै काल परीं मनभावन आवनहार भये ॥११०॥
केकी पपीहन की बर बानि झिल्ली झनकार की झाँपति सी ।
देखि तमासो दिसा विदिसा बिरही उर अन्तर कांपति सी ।
ठाकुर ठाढ़ो मनोहर पास कहै बर बाल निसापति सी ।
काम कृपाण, कि डोरी लिये चपला फिरै मेघन मापति सी ।

सखिन दुराई वृषभान की दुलारी राधे,
छाई दुचिताई अति नन्द के नँदन मैं ।
झूमि आये बादर झपकि अँधियारी आई,
धाई फिरै दामिनी दिखाई देन घन मैं ॥
ठाकुर कहत चारु चातक चढ़े हैं चाउ,
आनँद उमंग मची मोरन के गन मैं ।
राधे राधे टेर टेर पीरो पट फेर फेर,
हेर हेर हरि डोले गेर गेर बन मैं ॥११२॥

(सवैया)

वा बरसै जल धारन सों रस धारन याहु मतीत करी है ।
घूमो रहै घुमडो वा मढ़ो यह लै मुरली अधरान धरी है ।
ठाकुर वाहि मिली चपला अबला मिली याहि चरित्र भरी है ।
देखत जोई कहै धनि सो घन स्यों घनश्याम सों होड परी है ।
पावस को परपंच बिलोकि अनंग ने बान निषंग ते काढे ।
भूमि हरीये परी जहीं बूंद उड़े बगला चलै सुख बाढे ।
ठाकुर बोलि उठे मोरवा घन घोरि उठे जितही तित गाढे ।
कामरी मांझ छिपाये छबीली को छाहरे कान्ह कदम्ब के ठाढ़े ।
सजि सूहे दुकूलन बिज्जु छटासी अटान चढ़ी घटा जोवती हैं ।
सुनतीं हैं महा सुर मारन के मदमाती सँजोग सँजोवती हैं ॥

कवि ठाकुर वे पिय दूर बसैं हम आँसुन सों तन धोवती हैं।
धनि वे धनि पावस की रतियां पति की छतियां लगि सोवती हैं।

पावस प्रपंच को तमासो अवलोकत से,
दामिनी के त्रास आय भूमि ना गिरत हैं।
मोरन मगन देखि चातकन चाव पेखि,
लेखि पति आपनो न थाके से थिरत हैं।
ठाकुर कहत हैं छिपत प्रगटत कहूं,
भूले अनुकूले भट सेरे ना भिरत हैं।
मंद मंद देखिये नखत बदरान मांझ,
मानौ चौंधियाने चन्द ढूंढ़त फिरत हैं ॥११६॥

चौक आसमान में अनेक शौक साहबी के,
गाहक रिझाइबे के ब्यौंत बिसतारे हैं।
कोई लाल पीरे कोई सेत नीले धारीदार,
कोई रंग सेंदुर के कोई धुँवाधारे हैं।
ठाकुर कहत देखि बादर अनेक रंग,
मन मनसूबा कै बिचार ये बिचारे हैं।
बादर न होंय बहु भाँतिन के रेजा ये,
असाढ़ रंगरेजा रंग सूखिबे को डारे हैं ॥११७॥

कारे कारे बद्दल सुहाये कहूँ सेत सेत,
कहूँ लाल लाल कहूं आभा पीरी पीरी री।
ज्यौं ज्यौं होत चंचल दिखात चंचला की चौंध,
त्यों त्यौं घनकी धुकार होत धीरी धीरी री।
ठाकुर कहत फिरैं चातक चढ़े से चाउ,
मोरन की अवली फिरत भीरी भीरी री।
कैसी नीकी लगन सोहाई सुख देन आज,
मंद मंद बैहर बहत सीरी सीरी री ॥११८॥

चंडित मनोज कैसे झला झूमि झूमि आवैं,
घूमि घूमि डारैं अलबेली तन पानी हैं।
दामिनी दमंक ठौर ठौरन दिखाई देत,
मानो इन्द्र रानी करै मेघ मिजमानी हैं।
ठाकुर कहत कूकि कूकि उठैं कोइलैं ये,
हूकि उठै बिरहा निसंक उर मानी हैं।
धरा डारैं खूंदे प्रेम फास कैसा फूंदैं आजु,
लेती द्वार मूंदे ऐसी बूंदैं बरियानी हैं ॥११९॥

कारे लाल पीरे धौरे धावत धुँवा के रंग,
कितने सुरंग किते रंग मटमाढ़े हैं।
कितने मही के रूप माधुरी करत घोर,
सोर चहूँ ओर होत गहगहे गाढ़े हैं।
ठाकुर कहत कवि बरनि बरनि थाके,
बरने न जात यों बहलि बर बाढ़े हैं।
मोहे लेत मनन जो ऐसा बने बनन जू,
आजु देखो घनन घनेरे रंग काढ़े हैं ॥१२०॥

भूमि हरी भई गैलैं गई मिटि नीर प्रबाह बहा बेबहा है।
कारी घटान अँधेरी कियो, दिन रैन में भेद कछू न रहा है॥
ठाकुर भौन तें दूसरे भौन लौं जात बनै न बिचार महा है।
कैसे के आवैं कहा करैं बीर बिदेशी बिचारन दोस कहा है १२१॥

दौरि दौरि दमकि दमकि दुरि दामिनि यों,
दुन्द देत दसहूँ दिसान दरसतु है।
घूमि घूमि घहरि घहरि घन घहरात
घेरि घेरि घोर घनो सोर सरसतु है।

ठाकुर कहत पिक पीकि पीकि पी को रटैं,
प्यारो परदेश पापी प्रान तरसतु है।
झूमि झूमि झुकि झुकि झमकि झमकि आली,
रिमझिम झिमिकि असाढ़ बरसतु है॥ १२२॥
आये बढ़ि चढ़ि कै उमण्डि नभमण्डल में,
धौम करि डारे जिन भेष रतियान के।
खूंद डारी धरनि सरन जल पूरि डारे,
चूर करि डारे सुख बिरही तियान के॥
ठाकुर कहत प्यारी आनंद उमंग भरी,
जोबन का चोज मौज क्यौंन बतियान के।
देख री असाढ़ के उमंडे एंड़े बेंड़े झला,
अजब अनोखे अलबेली बुँदियान के॥ १२३॥

हिंडोरा वर्णन

वृन्दाबन युगुल किसोर परना के धाम* स्याम,
अभिराम राधे ओर दृग जोरे हैं।
सावन की तीज तजबीज कै बसन सूहे,
पहिरे बिमल जामें सौरभ झकोरे हैं॥
ठाकुर कहत देन दरस दयाल भये,
देखन देखैयन के चित्त लेत चोरे हैं।
बोलती हैं मोरैं होतीं घनन की घोरैं बीर,
दोनों गठजोरैं आजु झूलत हिंडोरे हैं॥ १२४॥

सलानो वर्णन

घर के न बाहर के काहे को करत घैर,
गरजी तमासे की हौं बरजी न रैहौं मैं।

---

*पन्ना (पन्ना में पन्ना को परना बोलते हैं) में युगल किशोरीजी का एक मंदिर है जिसमे हीरा जवाहिरादि जड़े हैं।

आजु शुभ सावन सलोनो को परब पाय,
अंग अंग सुभग सिंगारन बनैहों मैं ॥
ठाकुर कहत संग सग ब्रजबालन के,
रंग भरे राखुरे उमंगन सों गैहों मैं।
देखि रक्षा-बंधन गोबिंद जू के हाथ साथ,
राधे की कजलिया निरावन को जैहों मैं ॥ १२५ ॥

दशहरा वर्णन

धम धम धौंसन की धुनि सुनि लाजैं घन,
फहरैं निसान आसमान अग छ्वैठे हैं।
केहरी करिंद मोर हंस मृगा नादिया हू,
और सब बाहन उमाहन उमैठे हैं ॥
ठाकुर कहत सुर असुर समूह नर-
नारिन के जूह नंद मन्दिर में पैठे हैं।
आओ चलैं लीजिये जू कीजिये जनम धन्य,
करुणानिधान कान्ह पान देन बैठे हैं ॥ १२६ ॥

मानव प्रकृति वर्णन

बार बीच अधिक अधीन ह्वै डरात फिरै,
बार बीच लगै याहि जम को न गीत है
बार बीच परम धरम के करम करै,
बार बीच भावै याहि अधम अनीत है।
ठाकुर कहत बार बीच रस-रङ्गी रस-भङ्गी,
बार बीच याहि कैसे कोऊ जीतहै।
मानुष हैं जे वे मन आपने ते जानत हैं,
मानुष के मन की निपट बाँकी रीत है ॥ १२७ ॥

कबहूँ यौ सँयोग के भोग करै जिनकी सुरराज का चाह सी है।
कबहूं यौ बियोग बिथा को सहैं जोऊ जोगिन हूँ कौं अकाहसी है
कवि ठाकुर देखो बिचार हिये कछु ऐसी अलाहदो राह सी है
यह मानस को तन मेरी भटू समयौ परै को बड़ोसाहसीहै १२८

आपनो बनाइबे को और को बिगारबे कों,
सावधान ह्वै के परद्रोह सो हुनर है।
भूलि गे दया के सिन्धु करुनानिधान कहूँ,
जिन्हें सब विश्व में बनाव को बितर है॥
ठाकुर कहत रँगे लोभ मोह माया माँहि,
कहत शरीर यह अजर अमर है।
हाइ उन लोगन सों कौन सो उपाय जिन्हे,
लोक को न डर परलोक को न डर है॥१२९॥

ऐसो अन्ध अधम अभागो अभिमान-भरो,
कौन सुख मानो तन मानस धरे कौ यो।
लोचत फिरत रंग रोचत रुखा पै रुख,
सोच नहीं होत है बिधाता बिसरे कौ यो।
ठाकुर कहत दुःख हरनी दया न होइ,
तौलौं फल पावै निज करनी करे को यो।
पावहु पलक की न खबर घरी की एक,
बाँधत बंधेज जन्म कलप भरे कौ यो॥१३०॥

देह गति।

याही के निमित्त नित भोजन अनेक भाँति,
याही के निमित्त हय गयै लीजियतु है।
याही के निमित्त चौज चातुरी बनाइ सबै,
याही के निमित्त धन धाम कीजियतु है।

ठाकुर कहत देखो याके राखिबे के हेत,
नीम करू भैषज सुधार पीजियतु है।
याही नर देही कौं परान छोड़ देते कैसे,
आरि वारि करिके पवार दीजियतु है॥१३१॥

मनुष्यत्व

(घनाक्षरी)

वेई नर निश्नय[१] निदान[२] में सराहे जात,
सुखन अघात प्याला प्रेम को पिये रहैं।
राम रस चंदन चढ़ाय अंग अंगन में,
नीति को तिलक बेंदी जस की दिये रहैं॥
ठाकुर कहत मंजु कंज ते मृदुल मन,
मोहनी सरूप धारे हिम्मत हिये रहैं।
भेंट भये समये असमये अचाहें चाहे,
ओर लौं निबाहैं आँखैं एकसी किये रहैं॥ १३२॥

जो छबिता कछु देखिये नैन सु वा छबि देख सराहितु है।
जासों लगी सुख आस कहूँ तिहि के दुख दीरघ दाहितु है॥
ठाकुर जो वे अचाही भये हम तो उनको भलौ चाहितु है।
या कुल रीत बड़ेन की प्रीत जो बाँहि गहे की निबाहितु है१३३

जानि परो जग पेखनो है यहि ते इहिं भाँति छके रहने है।
बात निरन्तर अन्तर की अपने दिल की न कहूँ कहने है॥
ठाकुर दोस लगाइये कौन को पाइये भाग लिखो लहने है।
काम इहै मरदानगी को सिर आन परैं सु लिये बहने है॥१३४॥

१-निश्चय। २-अन्त।

थिगरी न लागै ऊधो चित्त के चँदोवा फटे,
बिगरी न सुधरै सनेह सरदन को।
आदने ई हाथ लै कै करत हवाल ऐसो,
कापै होनहार यों हलाल गरदन को।
ठाकुर कहत हौं बिचार यौं बिचारि देख्यो,
बिरलो मिले है जो सहाय दरदन को।
बैर प्रीति-रीति जासौं जैसी जहां मानि लियो,
एक सी निबाहिबो है काम मरदन को ॥१३५॥

आनन प्रेम की गांस नहीं नहिं कानन बांसुरी को सुर छायो।
बैनन सों न जप्यो मँदनन्दन नैनन ना ब्रजचन्द लखायो ॥
ठाकुर हाथ न माल लई नहीं पाइन सों हरिमन्दिर धायो।
नेक कियो न सनेह गोपाल सों देह धरे को कहा फल पायो ॥

ये जो कहैं तो भले कहिबो करैं मानस हांसी सबै सहि लीजै।
ते बकि आपुहिं ते चुप होहिंगी काहे को काहुवै ऊतर दीजै ॥
ठाकुर मेरे मते को यहै धनि मानि कै यौवन रूप पतीजै।
या जगमें जनमें को जिये को यहै फल है हरि सों हित कीजै ॥

धिक कान जो दूसरी बात सुनैं अब एकही रङ्ग रहो मिलि डोरो।
दूसरो नाम कुजात कढ़ै रसना जो कहैं तो हलाहल बोरो।
ठाकुर यों कहतीं ब्रजबाल सो ह्यां बनिता न को भाव है भोरो।
ऊधो जू वे अँखियाँ जरिजायँ जो साँवरो छांड़ि तकैं तन गोरो।

बिधना बड़ाई दई ताहि तकि आवै कोई,
ताके काज दौरि कै दया के हेत ढरिये।
ताहि धन दीजै जस लीजै जग जीवन को,
सदामत दौरि दुख दीनन को हरिये।

ठाकुर कहत जो पै गांठ से न दयो जाय,
देतहू न बनै उपकार से न टरिये।
आपने कहे ते काहू दूसरे को भलो होय,
भलो कहिबे में कछू गाफिली न करिये ॥१३९॥
जौ लौं काहू पारखी ले भेंट होन पाई नाहिं,
तौ लौं तेई लागत गरीब से सरीरा हैं।
पारखी ते भेंट भये दामहू चढ़त लाख,
कीमत के आगरे औ बुद्धि के गँभीरा हैं।
ठाकुर कहत नाहीं निंदौ गुणवानन को,
रंक से दिखात पै सहूर सूरवीरा हैं।
ईश की कृपा ने होत ऐसे कहूँ कहूँ नर,
मानुप सहूर भरे धूर भरे हीरा हैं ॥ १४० ॥

विधि विडंबना।

ऐसे अन्ध अधम अभागे अभिमान भरे,
तिन्हैं रचि रचि दिन नाहक गँवाये तैं।
भकुआ भरजी अरु हिरसी हरामजादे,
लाबर दगैल स्यार आँखिन दिखाये तैं॥
ठाकुर कहत ये अदानियाँ अबूझ भोंदू,
भाजन अजस के वृथाही उपजाये तैं।
निपट निकाम काम काहू के न आवैं ऐसे,
सूरत हराम राम काहे को बनाये तैं ॥१४१॥
अनगढ़ बातैं तेरी कहाँ लौं बखानौं दई,
मानुष को प्रीति दीन्ही प्रीत मैं बिछोह तो।
कूरन कौं धन दीनो सुघरन सोच दीनो,
ऐसो पै न दीनो जैसो जहाँ जौन सोहतो।
ठाकुर कहत जो पै बिधि मैं बिबेक होतो,

सुर नर मुनि पसु पंछी कैसे मोहतो।
रूपवन्त प्रानी जो कसकवन्त होतो कहूँ;
सोने में सुगन्ध के सराहबे को को हतो ॥१४२॥

काल कुटिलता।

(घनाक्षरी)

दंभी दगाबाजन की बाढ़ी है अधिक थाप,
ज्ञान ध्यान वारेन की बात वे प्रमाना है।
पूँछत न कोऊ कबि कोबिद प्रवीनन को,
नमकहरामी को हजारन खजाना है।
ठाकुर कहत कलिकाल को प्रभाव देखो,
झूठन की बातन पै जगत दिवाना है।
बड़े बड़े सूबा तेऊ जात पाप डूबा देखि,
जीव अति ऊबा या अजूबा कारखाना है ॥१४३॥

रूप है न रस है न गुन है न ज्ञान कहूँ,
शील है न सत्य भाई निरस जमानो है!
रीति है न प्रीति है न नीति है न न्याव कहूँ,
घर घर देखियत हरष हिरानो है॥
ठाकुर कहत भूलो सकल सँजोग भोग,
कठिन कुजोग लोग सबही बिरानो है।
कौन को जतैये कहाँ जैये कहाँ पैये बीर!
मन बहराइबे को ठौर ना ठिकानो है ॥१४४॥

मीरजादे पीरजादे असल अमीरजादे,
साहेब फकीरजादे जादे आप खो रहे।
रावजादे राइजादे साहुजादे शाहजादे,
कुल के असीलजादे नींद ही में सो रहे॥
ठाकुर कहत कलिकाल के कहर मांझ,

पहर पहर पर भारी भय भो रहे।
दान किरवान समै ग्यान गुन स्यान समै,
सब जाइ मिटि कै हरामजादे हो रहे ॥१४५॥
ऐरी मेरी बीर कन्त कौन पै कमान जाइ,
राजन की मतिऊ पै चलै ना उपाव री,
तन धन छीन भयौ मनुआ मलीन भयौ,
मनसा बिकल कल पावत न बावरी॥
ठाकुर कहत या जहान में जबुर फैली;
मैली भई मति कछु जतन बताव री।
खैबे को जु सौंहि राखी कैबे को सुपाप राख्यौ,
लैबे कौं अजस अरु दैबे को सु लात्र री ॥१४६॥
वे परवीन बिचच्छन लोग बने सब पै कछु आन भये री।
चीखे सवाद महा अति मीठे सु सीखे सुभाइ नये ही नये री।
ठाकुर कौन सौं का कहिये अब वे चित-चाहिबो वे समये री।
वे दिन वे सुख वैसे उछाह सु वे सब बोर हिराय गये री।
चाल न वा चरचा न वा चातुरी वा रस रीति न प्रीति को ढौर है।
सांच घटो बढ़ो भूंठ जहान में लोभ के लाने जहां तहां दौर है।
ठाकुर वेई गोपाल वही हम वोही चबाउ बनो इकठौर है।
मेरेइ देखत मेरी भटू सिगरो ब्रज ह्वै गयो और को और है।

लोकोक्ति लक्षक काव्य

(सवैया)

दान दया बिन दीबो कहा अरु लीबो कहा जब आपु ते मांगो।
प्राण गए रस पीबो कहा पग छीबो कहा उर प्रेम न जागो।
नारि कहा जेहि लाज तजी गुरु कीबो कहा भ्रम दूरि न भागो।
या जग में फिर जीबो कहा जब आँगुरी लोग उठावन लागो।
राखे हुते मह रावरे को बल मान गुमान बड़ी गरुवाई।

काम परे बड़े कामन में कहुँ ह्वैहैं विशेष कै आनि सहाई।
ठाकुर गौर करौ केहि कारण बैठि रहे मन में अरगाई।
थोरिहि बात में धोखो मिटो बढ़ियाई भई कलई कढ़ि आई १५०
हरि लांबी औ चौरी बखानत ते अब गाढ़े परे गुण और कढ़े जू
गुण और सुनो सजनी उनके कपटी गुरु के चटसार पढ़े जू।
कबि ठाकुर चूक या नैनन की हमसे उनसे नव नेह बढ़े जू।
हम जानती तौं हरि मीत ह्वै हैं न कढ़े, हरि चैतुवा मीत कढ़े जू
हौं बरजी बर बीलक लौं दुलही यहि मारग स्यामरो आवै।
ढीठ भई चितवै चहुँ ओर अमंद हँसै हँसि हार हलावै।
हौं तो कही न बिलोकु गोपालहि यौं उरझी अब को सुरझावै
जो बिष खाय सो प्राण तजै, गुड़ खाय सो काहे न कान छेदावै।
खेत कुटुंब ते लीन्ही उखारि नबेर नबेर कै स्वाद नवीनी।
फेर दुरे दुरे खाईं अघाय रुचीं न रुचीं की जनाय न दीनी।
ठाकुर यों कहतीं ब्रजबाल सो ऊधो सुनो या कथा रस भीनी।
खाईं कछू बगराईं कछू हरि गोपी गुलाम की गाजरैं कीनी।

दगा देय यार और माता उर बैर मानै,
मारो चहै पिता तासों कौन बिधि जीजिये।
बसे जाकी बांह सो न बांह को निबाह करै,
जान के अजान बनै कैसे जान दीजिये।
चढ़े जाकी नाउ सोइ जान बूझ बोरो चहै,
ठाकुर अजान ता पै दिनै दिन छीजिये
राजा ह्वै कै तजै न्याउ संगी ह्वै कै करै घाउ,
बारी खेत खाय तो उपाय कहा कीजिये।१५४।

यह चारहूँ ओर उदौ मुखचन्द को चांदनी चारु निहार लै री।
बलि जो पै अधीन भयो पिय प्यारी तो एतो बिचार बिचार लै री।
कबि ठाकुर चूकि गयोजो गोपालतो तैं बिगरी को सम्हारि लैरी

अब रैहै न रैहै यहौ समयो बहती नदी पांव पखार लै री ।
बृन्दा सी वृन्द अनेक छली तह गूजरो नेह सों को अँगटोहै ।
भौंर की नाव भयो मन ज्यौं अब जानि परी बल ही जग जोहै ॥
ठाकुर वे ब्रज ठाकुर हैं सु बनी न बनी उनको सब सोहै ।
मीर बड़े बड़े जात बहे तहं ढोलिये पार लगावत को है ॥
पावस में परदेस ते आनि मिले पिय औ मन भाई भई है ।
दादुर मोर पपीहरा बोलत तापर आनि घटा उनई है ॥
ठाकुर वा सुखकारी सुहावनि दामिनि कौंध कितै धौं गई है ।
री अब तो घनघोर घटा गरजौ बरसो तुम्हैं धूर दई है ॥
पिय प्यार करैं जेहि पै सजनी तेहिं की सब भांतिन सइयत है ।
मन मान करौं तो परौं भ्रम में फिर पीछे परे पछतइयत है ॥
कवि ठाकुर कौन की कासों कहौं दिन देखि दसा बिसरइयत है ।
अपने अटके सुन परी भटू निज सौत के मायके जइयत है ॥
देवरानी जेठानी सबै जगतीं खड़को सुनिहैं न गहौ बहियां ।
हमैं सोवन देउ उलाइत का हरि धीर धरौ हिरदै महियां ॥
कह ठाकुर क्यौं उकताव लला इतनी सुनि राखिय मो पहियां ॥
सब रैन परी न खिझाओ हमैं अबै सेर में पोनी कती नहियां ॥
घैर भयो सिगरी नगरी हठि बैर भयो हमरी बखरी में ।
बात उजागर सोच कहा जो घटैगी जफा सो कढ़ै तखरी में ॥
ठाकुर कीरति का बरनो सो अचानक भेंट गली सँकरी में ।
मूसर चोट की भीति कहा बजिकै जब मूंड़ दियो ओखरी में ॥
मूढ़ सुनै कब राम कथा, कब दै धन पूजत बिप्र बिरागी ।
सूमन को धन मूसत चोर; कि लूटत भूप, कि लागत आगी ॥
ठाकुर धर्म के हेत लो तो दुख पुंज कथै हरि के हित लागी ।
आनन उंच उठाय ज्यौं रोवत संख सुने शठ स्वान अभागी ॥
बुरो मानतीं जो सिख देत भटू दुख पावतीं जो समुझाइबे में ।

कही जायगी देखि कुरीति कछू समझौगी न बात बुझाइबे में ॥
कहा पाओगी हाथ पराये बिके कह ठाकुर लोग हँसाइबे में।
हमैं को गनै कासों परोजन है बुनिबे में न बीन बजाइबे में।१६२।
हौं ही समय लखि कै उत आइ कहो करिहौं सब रावरे जीको।
बारहो बार न ऐये इतै यह मेरो कछू है परोस न नीको।
ठाकुर चाह भरे नितही तुम हार लै आवत मौलसिरी को।
कोऊ कहूँ लखिलेय जो याहि तो होय लला मोहि लीलको टीको१६३
हम तो पर-नारि भई सो भई तुम तो सुधरौ सखियाँ सिगरीं।
यह रीत चले जग नाम धरै तिहि ते न कढ़ो मग मो ढिग री ॥
कबि ठाकुर फाटी उलङ्क की चादर देउँ कहाँ कहँलों थिगरीं।
तुम आपनी ओर बचाव करो हम तो बनकै बिगरीं बिगरीं।१६४॥
परिगे किधौं काहु के पाले अरी गुरू लोगन के डर सों डरिगे।
दिन बूड़त ही तैं किवारे लगे मग हेरो न मेरी बिथा हरिगे॥
कहि ठाकुर औध हती दिन बूड़त आवन की री घरी धरिगे।
अधिरात भई हरि आये नहीं हमे ऊमर*को सहिया‡करिगे।१६५।
साँची करारैं करीं हमसों हमतौ तऊ नेकु न मानती तीं।
उन बामन ह्वै बलि जाइ छले हम सो बतियाँ पहिचानती तीं ॥
कवि ठाकुर बीधि गईं अँखियाँ तिनसौं मिलिकैं सुख मानती तीं।
तुम तौ अब राम के राज करौ हमतो धरे बासन जानती तीं।१६६।
नाध नथो है तिहारे पिया सतरातीं कहा कोउ स्यान सिखैहै।
पानिप नै कै चले सजनी, यह भाति न प्रीत सदा निरबैहै॥
ठाकुर जो पै यही करने तौ कहा मनमोहनी क्रोध करैहै।
ह्वैहै नहीं मुरगा जेहि गाँव भटू तिहि गाँव का भोर ना ह्वैहै। १६७।
का कहिये कहिबे की नहीं मग जोवत जोग्रत जो गयौ है।
उन तोरत बार न लाई कछू तन तैं बृथा जोबन खो गयौ है॥

---

* ऊमर = गूलर ‡ सहिया = कीडा

कहि ठाकुर कूबरी के बस ह्वै रस मैं बिस बावरो वो गयौ है।
मनमोहन को हिलिबो मिलिबो दिन चारिक चैत सो ह्वो गयौ है॥
यह प्रीति अजार को औरै तबीब परन्तु कछू सुनलीजतु है।
तुम बैद भई फिरौ भेद न जानतीं रोगन सों तनु छीजतु है॥
कवि ठाकुर रोगन के री इलाजन एक से एक तैं कीजतु है।
जग एकन को भँटे बाइरे*बीर सो एकन को पथ दीजतु है१६९
अपने नहिं होत पराये पिया यह जानत मैं अरु बेदन गाई।
सो अवहेलि कै प्रीति करी गुरु लोगन की कुलकानि गँवाई॥
ठाकुर ते न भये अपने अब कौन को दोस लगाइयै माई।
दूध की माखी उजागर बीर सु हाइ मैं आँखिन देखत खाई।१७०
को उनसों परवीन बड़ो अपकीरत आपनी औरे सुनावै।
आजुबनी जो बनी सु बनी अब का कहिकै कोउ बाद बढ़ावै॥
ठाकुर एक बिचार हिये अब नीर उलीचि को कीच मचावै।
ऐसेही सोच के सोचै परं अब ऊमर फोरि को जीव उड़ावै।१७१।
बन जाइ बने, बिगरै बिगरे भरमाये न काहू कहे लचिये।
जग आपनो रङ्ग पसार बिसार न औरन के रंग में रचिये॥
कहि ठाकुर या भवसागर में परि नेह कलङ्कन सों बचिये।
अब ऊधो सुनो यह प्रीत की रीत जु काछिये काछ सुई नचिये॥
सुनि कै धुनि यौं चित में हुलसी उत जैये घने सुख पावने री।
ढिग आन लख्यौ उनकी उलटी कहूं ताल कहूं सुर गावने री॥
कहि ठाकुर भूल सु नैनन की तिन सों कहा नेह बढ़ावने री।
चलु दूर भटू हौं वृथा भटकी लगैं दूर के ढोल सुहावने री।१७३।
घर बाहिर लोग लुगाइन नैं परपञ्च रचे सो बिचारने है।
फिर जानत राम दोऊ दिसि की अस चित्त तैं नाहिँ बिसारने है॥
कवि ठाकुर स्याम सुजान सुनौ करि एक दोऊ निरधारने है।

*बाइरे = बादी बढाने वाले।

करिमंत्र जरूरौ गरूरौ भलो बगरूरो उठो सो सम्हारने है ।१७४।
छोड़ि पतिब्रत प्रीत करी निबही नहि औण सुनी हम सोऊ ।
मौन भये रहनेई परो सहनेई परो जो कहै कछु कोऊ ।
सांची भई कहनावति वा कवि ठाकुर कान सुनी हती जोऊ ।
माया मिली नहिं राम मिले दुबिधामें गये सजनी सुनु दोऊ ।१७५॥
यह प्रेम कथा कहिबे की नहीं कहवोई, करौ कोउ मानत है।
पुनि ऊपरी धीर धरायो चहै तन रोग नहीं पहचानत हैं ।
कहि ठाकुर जाहि लगी कसकै नहि सो कसकैं उर आनत हैं ।
बिन आपने पायें बिवाई गये कोऊ पीर पराई न जानत है ।
भूलि न प्रीति करौं तुमसों कबहूं नहि नैन सो नैन मिलाऊं ।
बात करौं न सुनौं तुम्हरी अपने चित की कबहू न चिताऊं ।
मोहि कहा परी प्यारे गोपाल जू लाज मरौं कुल कानि घटाऊं ।
ना बिष खाउं न प्राण तजौं गुर खाउं न काहू सों कान छिदाऊं।
जैसई लाल बड़े रिझवारहैं वैसई संग मिलो अनमोलो ।
चंद मुखी तजि राधे सी बामहिं कूबरी सों हित मानिकै बोलो।
ठाकुर तो सों कहा कहिये चुपकै रहिये गहि कै अनबोलो ।
आंधरे साहब के घर में दमरी को हिसाब हजारा को जो लो ।
वे सब जानती तीं उनकों पर मोपै परी यह डीठ तिरीछी ।
बैर सहो घरहाइन को अरु बानी सही कछु तीर तैं तीछी ॥
ठाकुर वे हरि छांड़ि गये अब योंही बकैं बकबादिन छीछी ।
ऊधो जू दोष तुम्हैं न उन्हैं हम लीन्ही है आपने हाथ ही बीछी।
रोजही आनि हरावत बातन या ढिठई तुम्हैं कौने सिखाई ।
देखि लई तुमरी करतूत सुबैठ रहो न करो चतुराई ॥
ठाकुर धोखो हतो अबलों अब रावरे देख लई या बड़ाई ।
चोरी छिपाये कहाँ सों छिपे बड़याई भई कलई कढ़ि आई।।१८० ।
योंहीं लुभानो पत्यानो लखे छबि देखि डरानो नहीं रँग कारे ।

ऐसी रँगी रति के रँग में घर बाहिर लोग लिखे सब हारे ॥
ठाकुर ताको इहै फल पैयत बासर रैन अनन्द बिसारे।
ऊधौ जू दोष तुम्हें न उन्हें हम आपुही पाँय पै पाथर पारे ।१८१।

देखे घनस्याम मैं कही के छबि भाई मोहि,
या सुनि लगाय कै गोपाल सों अरझतीं।
तादिन तैं ननँद जिठानी मोसों ठानी रार,
पास औ परोस बसैं तेऊ आन खिझतीं॥
ठाकुर कहत कैसे बसिये री ऐसे बास,
ऐसी ऐसो बात जहाँ नित नौ सिरजतीं।
देखति हौं ब्रज की लुगाइन भयो धौं कहा,
खेत की कहे तें खरियान की समझतीं।१८२।

कहि आवत ह्यां की कुरीत लखैं न तौ का इती बात चलाइबे मैं।
तुम पांच की सात लगाओ भले भला पैहौ कहा खिसियाइबे मैं॥
कवि ठाकुर राम के राज करौ दुख पावतो ओ समझाइबे मैं।
हमैं बात कहे को प्रयोजन का बुनिबे मैं न बीन बजाइबे मैं।१८३।

फुटकर

(उद्धव बचन कृष्णप्रति)

आय जुरीं बिजुरी सी कितेकउ प्रेम प्रवाह कथा तिन बांची।
ऊधो सुनो तुम ऊधो सुनो तुम ऊधो सुनो तुम या धुनि मांची।
ठाकुर कौन सों का कहिये गति देखि कै मेरी गिरा तहँ नाची।
हां इतनी कहने ई परी हमैं सांची है सांची है सांची है सांची।

तुलसीकृत काव्य की समालोचना

वेद मत संमत पुरांण उपुरानन को
शंभु को विलास इतिहास तरसत है।

सोभामई शीलमई रीतिमई प्रीतिमई,
नीति के प्रमानन प्रसिद्ध दरसत है।
ठाकुर कहत धन्य तुलसी तिहारी बानी
अकह कहानी रससानी सरसत है।
चंद सी चमेली सी गिरासी गंग धार कैसी
मघा मेघमई राम जस बरसतहै ॥१८५॥

(सवैया)

रेसम को गुन छीन छला कर ऐंचि कै तोर सनेह रचावै।
देह दसौ अँगुरी कर पाँइ बरै सुरझाइ कै रंग मचावै।
दोहत सी मन पोहत सी तन छोहत सी छबि भौंह चलावै।
चंचल नैनन सैनन सों पटवा की बहू बटवा से नचावै।
लहरैं उठैं अंग उमंगन की मद जोबन के बहराती फिरै।
बड़री अँखियान चितै तिरछी चित लोगन के लहराती फिरै॥
कह ठाकुर है तन ओप खरी छिनहू न थिरै थहराती फिरै।
सिर ओढ़ उढ़ोनी कसे छतिया फरिया पहिरे फहराती फिरै।
देखे अबेलें किते दिन ह्वै गये चाह गई चित सों कढ़ि सोऊ।
आपनी सूझ तौ ह्वै रहौ आपनी मेरी सुनौ तो कहै किन कोऊ।
ठाकुर या ब्रज गांव के लोग चवाई कहैं तुम एक हौ दोऊ।
प्रीति हमैं तुमैं टूटि गये की अबै लौं प्रतीत न मानत कोऊ॥
चौहट कौ मिलिबौ तो रह्यो मिलिबौ रह्यो औचक साँझ सबेरो।
और इती बिनती तुम सों हरि आइ अगौत पछीत न घेरो।
ठाकुर जो मिलि जैये कहूं मग तौ जहँलौं इकही टक हेरो।
या ब्रज के ब्रजबासी सबै बद नाम करैं तुम्हरौ अरु मेरो॥

हरि जूकी गैन यह मेरी पौंर अगवासो,
ह्यां ह्वै कढ़ो चाहौं मोहिं काम घनौ घर कौ।
तापै घरहाई दुखहाई सोर पारती हैं,
बास छोड़ दीजै कै निकसिबो डगर कौ।

ठाकुर कहत उकराइन भई हौं सुनि,
सुनि कै उराहनो जी हो रहो अधर को।
घरी पार होइ तो बचाये रहौं मेरी बीर,
देहरी दुआर दुख आठहू पहर को ॥१६०॥
बैठे पटा पर बिप्र बखानै लगी पलका सों सुनै सियरा सों
जोतिष देख ले ऐसी कहै गठियाय ले आँचर के छियरा सों।
ठाकुर वा दिन देहौं कहा यह बूझिले बात सबै जियरा सों।
मोहन को मन तों सो लगै तैं लगै मनमोहन के हियरा सों।
बिप्र की बानी सुने सकुची कही वा दिन तेरे बिषाद नसैहौं।
रंक ते ह्वै हौ निसंक महा मनमोहन को जब अंक लगैहौं।
ठाकुर मीठो करौं मुख रावरो पावँ परौ जग कीरति गैहौं।
हाथन चूरा गरे मणिमाल सु कानन को मुकुताहल दैहौं।

दरियाव सिंह (चातुर)

ठाकुर के पुत्र (कविता काल १८८० वि०)

अकाल के कवित्त ।

(चातुर के समय में एक बहुत बड़ा अकाल पड़ा था, अना बृष्टि के कारण लोग बहुत दुखी थे। लोग कहते हैं कि उस समय चातुर जी ने भगवान की प्रार्थना में ये कवित्त कहे थे। वे धूप में खड़े होकर तब तक कविता कहते रहे जब तक पानी बरसना नहीं आरम्भ हुआ। उन्होंने पच्चीस कवित्त कहे थे, उनमें से हमें पाँच कवित्त मिले हैं।)

गुनन गँभीर रघुबीर हे रमा के पति,
तीछन तपन ताप ईछन जुड़ाइये ।
सूखीजात साखा साख बिरद की दूखीजात,
भूखी जात अवनी न रीति अजमाइये ।

'चातुर' धरत धीर कैसे हू न कोऊ अब,
विश्वनाथ ताते विश्व-विनय सुनाइये।
नीरज नयन नील नीरद बदन पाय,
नीरद ते नीके नाथ नीर बरसाइये ॥ १ ॥

जोर जल बरसा न होत कौन कारन ते,
दीखै खंड मंडल में सबही सुखानो सो।
बूझैं एक एक सों अबूझ ह्वै अचंभो मान,
कैधौं भूमि भावती को भाग है खुटानो सो।
'चातुर' लई है किधौं बरसा पकरि काहू,
स्वामी सरवग्य नहिं जात खेल जानो सो।
मेघन को पौरुष सो परिगो पुरानो किधौं,
समुद सुखानो कै सुरेस बैकलानो सो ॥ २ ॥

बेगि सुरनाथ को बुलाय के हुकुम दीजै,
कौसिला के लाल काल डर डरियत है।
बरसावै मेघन जुड़ावै अवनी की ताप,
जोर जुग जानु पानि पांय परियत है।
'चातुर' कहत हरि हरष हिये में हर,
भांतिन हमेस सबही के भरियत है।
विश्वनाथ विश्व दुख मेटन कृपा के सिंधु,
विश्व टेर सुनि कै न देर करियत है ॥ ३ ॥

हैफमान जीव बसुधा के जसुधा के जसी,
टेर टेर तोहि नीर पीर सों फिरत हैं।
उमड़े अड़े हैं मड़े मंडल मही पै बांधि,
घेरो बांधि बांधि छोनी छोर लौं घिरत हैं।
चातुर जुरत रोज रोज ही बिथर जात,
छलिया न एकौ ठौर छिनहू थिरत हैं।

बद्दल बिलंद बरसा के बिरुदैत कछू,
कठिन कज़ाक कैफ खाये से फिरत हैं ॥४॥

फुटकर ।

बाजैं सुर दुंदुभी अवाजें अति आनँद की,
मेघन मजा से मंजु कैसी झर लाई है ।
धन्य या सुदिन सुख सोहरो महीना धन्य,
हम सब धन्य ब्रज भूमि धन्य गाई है ।
'चातुर' करोर भांति धन्य नंद गोप को है,
भाग की भलाई जाकी बरनी न जाई है ।
धाई धाई फिरत बधाई धाम धामन मैं,
आजु जसुधा के बसुधा की निधि आई है ॥५॥

सवैयाँ

गावती मंगल गीत मनोहर पूरन प्रीति की रीति दिखावैं ।
धन्य धरा बरसाइत जानिये मानिय भाग्यवती यहि पावैं ॥
'चातुर' रंगभरी उमंगी जमुना तट जोबन जोति जगावैं ।
आज विनोद भरी बनिता बर पूजत गौरि गनेस मनावैं ॥ ६ ॥

चित्र विचित्र रचै रचना रचि जानत कोऊ न भेद प्रवीने ।
ईस बखानैं मुनीस बखानैं न जानैं तऊ छल ये रस भीने ॥
चातुर संग सखी न सखा बन लेत सबै सुख स्वाद नवीने ।
मोहिनी के कर मोहन आज लगावत हैं मेहँदी मनु दीने ॥

कालिंदी कूलन फूलन सों भरी सुंदरता सी भरी रस सोहै ।
साँवरे अंग सुरंग दुकूल सराही न जात कछू छबि जो है ॥
चातुर, राधे लखी परखी हरखी हर भाँतिन सों मन मोहै ।
फूलन वारी मनोज की हूलन झूलनवारी नई यह को है ?

आनँद अरोरैं जे सँजोगी भोगी भाग भरे,
बिकल वियोगिनकी छतियां सकाती हैं
वीरहौं कहाँ लौं कहौं तोसों समझाय आय,
जोगिन हू केरी जोग जुगतैं भुलाती हैं
ऐसे मैं जो पिय सों रिसाती सतराती ताती
बतियाँ सुनाती ते न चातुर सुहाती है॥
डोरैं जलधरन की सरन हिलोरैं आजु,
घनन की घोरैं धरा फोरें कढ़ी जाती हैं।६।

शंकर प्रसाद (शंकर)

ठाकुर के पौत्र (कविता काल १६०० के कुछ पूर्व)

सीतल मंद सुगंध लिये सुचि पौन बहै रुचि कुंजन माहीं।
सूर-सुता की उठैं लहरैं कहरैं करैं मोर करैं घन छाहीं॥
'शंकर' सोभा विलास दुहून के देखत ही रति काम लजाहीं।
मूल कदंब सखीन के मध्य सो लाड़िली लाल खड़े गलबाहीं॥

कुंडल गोल कपोलन पै अरु चंदन खौर सुगंधन माथ मैं।
अंग अनंग की ओप चढ़ी अरु संग न कोई सखा लिये साथ मैं॥
ता दिन तें कवि शंकर यों कह केसर सो भरि गो निशा नाथमैं।
बुंद प्रसेद के आनन में लख कुंद के फूल मुकुंद के हाथ मैं॥

दंपति प्रीति भरे बिलसैं घने कुंजन में सँग कोई सखी न है।
सुंदरि ताही समैं छल सों मुरली लई कान्ह के हाथ सों छीन है॥
शंकर काम किलोल भरी धरि पीन पयोधर पै सो प्रवीन है।
मांगी जबै हरि, हेरि कह्यो लखौ बाँसुरी है कि या बीन नवीनहै॥

शब्दकोष ।

अंईगई करना=दरगुज़र करना, उस ओर विशेष ध्यान न देना।

अँकावना=जँचवाना ।

अंदाज=परिमिति, हद, मर्यादा ।

अकह=अकथ्य।

अगाह=अगाध ।

अखती=अक्षय तृतीया । विशेष विवरण के लिये २५ पेज का नोट देखिये)

अगीत=आगे, घरके आगे ।

अगवासो=मकान का अगला भाग।

अघावँ=सन्तुष्ट होऊँ ।

अचाहि=अप्रेम ।

अजाब=पागल,मूर्ख, (अज्ञान)

अजार=रोग ।

अजूबा=विचित्र ।

अटक=रुकावट, बाधा।

अट-पट=कठिन जो समझ में न आवे।

अटके=काम पड़ने पर।

अड़े हैं=अड़ गये हैं ।

अथाई=बैठक !

अंदाज भर=हद तक

अदानियाँ=नादेहन्दा, कंजूस ।

अद्धर=निराधार, निराश्रय ।

अधर को=बीचोंबीच का, न ज़मीन का न आस्मान का ।

अनगढ़=बे किते की ।

अनत घनत=अन्यत्र कहीं, इधर उधर ।

अनबोलो=मौन ।

अनी=नोक ।

अनूतरी=(अन + उत्तरी) ऐसी बात जिसका जवाब न देते बनै

अनैसो=(अनिष्ट) बुरा ।

अनौटा=पैर का एक जेवर जो अँगूठे में पहना जाता है ।

अन्यारो=अनियारो, अनीदार, नुकीला ।

अबूझ=निर्बुद्धि ।

अमान=बेप्रमान,बहुत अधिक ।

अमीर जादे=अमीर, धनी, धनिक पुत्र।

अरगाई=अगल,चुप ।

अरझना=उलझना ।

अरराना=अरारा शब्द करना ।

अरोपै=आरोपित करै ।

अरोरैं=चुन चुन कर लेती हैं । बींछकर बड़ा बड़ा लेती हैं ।

अलाहदी=भिन्न, अलग ।
अवगाहना=थाह लेना ।
अवहेलि=न मान कर ।
अवाई=आगमन ।
असीलजादे=कुलीन ।
अहानो=(आख्यान) कथा ।
आगरे=बड़े ।
आगरै= बढ़कर ।
आँगुरी उठाना=बदनाम करना ।
आँचर=अंचल ।
आंजुरी=(अंजलि) हाथ ।
आँधरे=अंधे ।
ई छन=इसी समय ।
उकताना=जल्दबाजी करना ।
उकराइन=हैरान, परेशान ।
ऊँचे उठाय=ऊँचा करके ।
उजागर=मशहूर, प्रसिद्ध, प्रगट ।
उझकैं=उछलते हैं, चंचल होते हैं ।
उढ़ोनी=ओढ़नी ।
उनई है=घिरी है ।
उपचार=उपाय ।
उपटहै=उभड़ आवेगा ।
उपुरान=उपपुराण ।
(धेनु) उवेरना=बसते बन की
ओर लेजाना ।
उमंडना=उमड़ना ।
उमाह=उत्साह, उमंग ।
उरझी=फँसी ।
उराहनो=उलाहना ।
उलंक=बड़प्पन ।
उलझा=धक्के ।
उलहे=निकले हैं ।
उलाइत=जल्दी, शीघ्रता ।
उलीचना=फेंकना, उलचना ।
ऊपरी=गैर, अन्य ।
ऊबा=घबड़ा गया ।
ऊमर=गूलर ।
ऊलट=उलटी बात, अंधेर ।
ऊसई=वैसे ही, ज्यों के त्यों ।
एँड़े बेंड़े=टेढ़े मेढ़े, घमंड भरे ।
एँड़=घमंड ।
एक से एक=एक से बढ़कर एक ।
ओखरी=ओखली, कांड़ी ।
ओषद=दवा । (सं० ओषधि)
ओर पारियो=अंत तक निर्वाह
करना ।
ओर=अंत ।
औधि=अवधि ।
औरै=दूसरा ही ।
कछुवै=कुछ भी ।
कजरारे=काजल लगाये ।
कजलियां=जौ के नवीन पौधे जो

कड़कियाँ छोटे छोटे पात्रों में बोती हैं और रक्षाबंधन के दिन अपने भाइयों को देती हैं।

कजाक=लुटेरे।

कजात=कदाचित, कभी।

कँटिआइबे को=अंकुरित होने को।

कटा=वातकता।

कँटिआना=अंकुर निकलना।

कढ़िआई=खुल गई।

कढ़ो=निकलो।

कथै=कहै।

कदीम=पुराने।

कमंध=कबंध।

कमंध पारना=कतल करवा देना।

कमनैत=धनुष चलानेवाली।

कमान=कमाने के लिए।

करमा=कर्माबाई। जिसके नाम पर खिचड़ी का क्षेत्र आज भी जगन्नाथजी में चलता है।

करपैंचि=हाथ से खींच कर।

करारैं=प्रतिज्ञा, कौल, करार।

करैंया कहा=क्या करनेवाली है?

करैया=करनेवाला।

कलई=ऊपरी मुलम्मा।

कसकवंत=दिलदार, भावुक, दयालु।

कसकी=द्रवित हुई।

कसकैं=पीड़ा।

कस के=ज़ोर से।

कसकौहैं=द्रवित होनेवाले।

कसाले=कठिनाई, कष्ट।

कहनावति=कहावत, लोकोक्ति।

कहर=क्रोध।

कहरैं=कूक, शोर।

काछु=पहनावा।

काछिये=पहनिये।

कातना=सूत निकालना।

का पर=किससे।

कारखाना=कार्य प्रवाह।

कितेकउ=कितनी ही।

किलकारे=बच्चों की आनंदसूचक किलकार।

किलोलैं=बालकों की आनंदसूचक शब्दोच्चार की आवाज़ें।

किवारे=किवाड़।

किसलै=नये पत्ते।

कीबो=करना, (बनाना)।

कुरई=उड़ेल दी, एकत्र कर दी।

कुरस=वैमनस्य।

कुरीभ=नाराजी।

कुलकानि=कुल मर्यादा। कुल की चाल।

कुँवना=कूप, कुआँ।

कूकना=आवाज से ।
केकी=मोर ।
केर=केला ।
केवार देना=दरवाजा बन्द करना ।
कैफ़=नशा । (अरबी)
कैसी=सदृश, समान ।
कोक=कामशास्त्र ।
कोरना=छेद करना, (दुख देना) ।
कोरीं=कोमल ।
कौंध=चमक ।
खगी=लगी ही थी, चुभी थी ।
खटपट=झगड़े ।
खड़को=खटका, आवाज़ ।
खरियान=खलियान ।
खरी ओप=अतीव सुन्दरता ।
खरे=अधिक ।
खिझतीं=झुँझलाती हैं ।
खिनखिन=क्षण क्षण ।
खिनौ=क्षण भर भी ।
खिसियाना=नाराज़ कर देना ।
खुटानो है=खोटा हो गया है ।
खुसामति=खुशामद, जी हुजूरी ।
खूँद डालना=पैरों से रौंद डालना ।
खूँदना=पैरों से रौंदना ।
खौर=तिलक ।
खोरि=गली ।

गठजोरैं=गाँठ जोड़े ।
गँठीली=गाँठदार ।
गठियाना=बाँध लेना ।
गभुवार=गर्भवाला, बच्चा (सं० गर्भालु) छोटा बच्चा ।
गभुवारे=बच्चे, दुधमुँहा बालक ।
गरूरी=अभिमान ।
गरूरौभरो=सम्मानपूर्ण ।
गलबाँहीं=गले में हाथ डाले ।
गँवावना=बिताना ।
गस्यो=(सं० ग्रसन) ग्रसित, जकड़ा हुआ, बँधा हुआ ।
गहगहे=जोर से ।
गहर=देरी ।
गाजरैं=गाजर (जड़ विशेष)
गाँठ=(ग्रंथि)
गाँठ से=अपने पास से ।
गाफिली=आलस्य, चूक ग़फ़लत ।
गाँस=फंदा ।
गाहने है=गिरो रखा है, बंधक है ।
गुइयाँ=सखी (गोहनियाँ) संगिनी,
गुन=डोर ।
गुरुलोग=बड़े लोग ।
गूजरी=गूजर जाति की स्त्री ।
गेरगेर=चारो ओर ।
गैल=गली ।

गोहन=साथ ।
घरहाइनै=घर फोड़नेवाली ।
घरी धरना=समय निश्चित कर देना ।
घाउ=विश्वासघात ।
घाबड़ो है जात=घबड़ा जाता है ।
घालना=मारना ।
घिनोंची=जलपात्र रखने का स्थान ।
घींच=गर्दन ।
घूँघट घालना=परदा करना ।
घैरु=बदनामी की चर्चा ।
घोर=गरज ।
घोरि उठना=गरजना ।
घोरैं=आवाजें ।
चकवानो=चकित ।
चकोसो=भौचका सा ।
चक्करा=बरा । भोजन का एक पकवान जो उर्द की पीठी से गोलाकार बनता है । चक्रवत् होने से बुंदेलखंड में कोई कोई उसे 'चक्रा' भी कहते हैं ।
चटक=अधिकता ।
चटसार=पाठशाला ।
चँदोवा=तम्बू ।
चबाउ=चुगुली ।
चबाइन=चुगुलखोरिनें ।
चसकौंहैं=जिनके देखने का चसका लग जाय ।
चहुँघां=चारो ओर ।
चहूँफन=बदनामी की चर्चा, अफवाह ।
चाकर=नौकर ।
चादर=चद्दर, पिछौरी ।
चाह=शौक़, उमंग, चाव ।
चाह=प्रेम ।
चाहने है=उचित है ।
चाहि=देखकर ।
चिताऊँ=सावधान करूँ ।
चितोत चितोत=देखते देखते ।
चीतिजात=सावधान हो जा ।
चुपरना=लगाना, पोतना ।
चूकन=चूक,भूल ।
चूरा=कड़ा ।
चेटकी=चेटककर्ता, जादूगर ।
चै=चय, समूह ।
चैतुवामीत=स्वार्थी मित्र ।
चोज=सुन्दर भाव ।
चोवा=एक सुगंध द्रव्य ।
चौचँद=बदनामी की चर्चा ।
चौचँदहाई=बदनाम करने वाली ।
चौंध=तेज़, चमक ।
चौंधियाने=चकबकाये ।

चौवर=चौलरी होकर, एक की जगह चार रेखायें होंगी ।

चोरी=चौड़ी ।

चौहट=(चतुर + हाट) चौक (नगरों की)

छको है=हैरान हुआ है ।

छननात=छिटकती है, फैलती है ।

छविता=सुन्दरता ।

छला=छल्ला ।

छाले=फफोले ।

छाहरे=छाया में ।

छिकुला=छिलका ।

छिँगुनी=पैर की छोटी अंगुली (कनिष्टका) में पहनने का जेवर ।

छिपिया=दरजी ।

छियरा=छोर, खूँट ।

छीजना=नष्ट होना, क्षीण होना

छीबो=छूना ।

छी जाना=छू जाना ।

छैठे हहै=छः ठो, गनती में छः है ।

छोकल=छिल्का ।

छोर लौं=अन्त तक ।

छोहत सी=छोह सा करती हुई

जक=यक्ष (यक्ष लोग बड़े चकित स्वभाव वाले होते हैं)

जतैयत नाहीं=बताते नहीं ।

जफा=जुल्म, अत्याचार ।

जबुर=अत्याचार ।

जमा=असली माल का मोल ।

जमानो=समय ।

जवाहिर=रत्न ।

जसुधा के=यशोदाके पुत्र ।

जागा=(जगह) स्थान ।

जादे=ज्यादा, बहुत अधिक ।

जानु=घुटना ।

जाम=(सं० याम) पहर ।

जिमाना=भोजन कराना ।

जियतु है=जीते हैं ।

जुरीं=इकट्ठी हुईं ।

जूह=(यूथ), समूह ।

जोऊ=जो भी, यदि ।

जोवना=देखना ।

झँगुली=कुर्ता, अंगा (बच्चोंका)

झँब्बूली=झुरेरदार ।

झटकना=झटका देना ।

झननाना=झन झन करना ।

झमकना=झुक जाना, आकर घेर लेना

झला=दँवगरा, एक बार की वर्षा ।

झापना=ढकना ।

झार=लपट ।

झिलती हौ=झेलती हौ, अबंर धस्ती देती हौ ।

झिल्ली=झिल्ली, झींगुर।
झीनी=महीन, बारीक।
झुकामुकी=तड़के, तड़के का वह अंधेरा जिसमें आदमी पह चाना नहीं जाता।
झुकैं=झिपते हैं।
झूमदेइ=झोंका देकर।
झूमिआये=घिर आये।
झुरई=सुखादिया।
झेलै=सहती है।
झौंर=समूह, गुच्छा।
टेर = पुकार।
टेरत=बुलाते हैं।
टीको=तिलक।
टोहना = टटोलना, छूना।
ठठकी=डरी हुई।
ठाड़ौ=खड़े।
ठिकाना=स्थान।
डगर=रास्ता।
डगरी=चली।
डगौ न=हिलो मत।
डरे रहैं=पड़े रहते हैं।
डाको=डकैती।
डीलदार=बड़े।
ढेल=ढेला, कंकड़।
ढोरैं=बूँदें।
ढोरामिलना=मिलकर एक होजाना
ढाकी=छिपी।
ढिगां=निकट।
ढिठई=धृष्टता।
ढोलिये=ढोल बजानेवाला।
ढौर=ढंग, तरीका।
तखरी=तराजू।
तजवीज कै=विचार कर।
तपन=सूर्य।
तबीब=(फा०) वैद्य।
तरसौं=लालायित हुई।
तरसत=तरसता है, लालायित रहता है।
तवाई=(तपाई)
ताती=कड़ी गर्म।
तिरछी=तिरछी, टेढ़ी।
थाप=विश्वास।
थिगरी=चकती, प्यौंदा।
दई=(सं० दैव) भाग्य।
दगा=धोखा।
दगैल=दागी, कलंकित।
दँतारो=दाँत वाला (सं० दंतालु) बड़े दाँतवाला।
दमकना=चमकना।
दमरी=दमड़ी।
दरबान=द्वारपाल।

दरारखाना=फटना ।
दहुचाल=शरारत, उपद्रव ।
दादुर=मेढ़क ।
दायल=दाँव लेनेवाले, घात पाकर बदला लेनेवाले ।
दारू=दवा ।
दारू-गंज=बारूद के ढेर ।
दाहितु है=जलाता है ।
दिन भरना=आयु व्यतीत करना ।
दिवाना=पागल ।
दुखहाई=दुख देनेवाली ।
दुन्ददेना=शरारत करना ।
दुनी=दुनिया, संसार ।
दुराई=छिपाया ।
दूखीजात=घटी जाती है ।
दोहतसी=दुहतीसी, सार खींचती सी
दोहन=दूध दुहना ।
धकधक परत=घबराहट फैलती है
धँधाना=गर्म होना, जलना ।
धरे बासन जानना=अच्छी तरह से जानना ।
धमारि=फाग ।
धुकार=शोर, गरज ।
धाँधना=बन्द करना, कैद करना ।
धुँधकी=अँधेरी ।
धूरदेना=चुनौती देना ।

धुवाँधार=मठमैला ।
धूँधर=अंधकार ।
धूरभरे=धूल से युक्त ।
धेनु उबेरना चराने के लिये गायों को घर से बन की ओर ले जाना ।
धौरा=धवल (सफेद)
धौंसा=नागाड़ा ।
नइयाँ=नहीं ।
नजरै=देखै ।
नथूनी = नाक का जेवर, नथ ।
नंद को = नन्द का पुत्र ।
नटखटी = शरारती ।
नटखट = शरारत, कुप्रबंध ।
नबेर नबेर = छांट छांट कर ।
नमकहरामी=कृतघ्नता ।
नहियाँ=नहीं ।
नादिया=नंदी बैल ।
नाधना=प्रबंध करना ।
नाध नधना = ठान ठानना ।
नालकी=टेढ़वा, मियाना ।
निकाइन=सुन्दरता ।
निकानो=सुन्दर हुआ ।
निजु=निश्चय ।
निदान=अन्त ।
निंदौ=निन्दा करो ।
निम्नय=निर्णय (निश्चय)

निबेरना=निपटाना।
निरधार=निश्चय।
निरधारना=निश्चित करना।
निरबैहै=निबहेगा।
निरसई=रस हीनता।
निवेरना=विचारना।
निसान=पताका।
नेकी बदी=भलाई बुराई।
नेजा=भाला।
नै कै=नीच होकर।
नौ=नया।
पखारना=प्रक्षालन, धोना।
पगे=भीगा।
पंछी=पक्षी।
पछीत=पीछे, मकान का पिछवाड़ा।
पछेली=पीछे कर दी।
पटवा=रेशम के डोरों से जेवर गुहने वाला, पटहारा।
पटा=पीढ़ा, पाटा।
पटैत=पटा (गदका) चलानेवाली।
पठाई=भेजी (प्रेषण से)
पत्यानों=विश्वास किया।
पथ=पथ्य, जूस।
पपीहा=चातक।
परखाइबो=परीक्षा कराना, जंचवाना
परतीत=कठिन अभाव।
परना=पन्ना (बुंदेलखंड) की एक प्रसिद्ध राजधानी, जुगल किशोर जी की झांकी बड़ी सुन्दर है। 'ठाकुर' वहां जाया करते थे।
परपंच=बखेड़ा, षड़यंत्र।
परवान=प्रमाण।
परसंगी=साथी।
परेखो=परीक्षा।
दीन परैया=दीन पड़नेवाला दीनता दिखानेवाला।
परोजन=(प्रयोजन) मतलब।
पलका=खाट।
पवार देना=फेंक देना।
पसार=विस्तार।
पहियाँ=पास।
पाइक=सेवक।
पाँख=(पक्ष) पंख।
पाग=पगड़ी।
पातरी=पत्तल।
पानिप=पानी, प्रतिष्ठा।
पार=पहर।
पारावार=अंत।
पारे=डाले।
पारे हैं=जीत लिया है।
पाले पड़ना=कब्ज़े में हो जाना।
पिघली=द्रवीभूत हुई।

पिरत हैं=पिसे जाते हैं।
पिलती हौ=लगती हो।
पीकना=कोयला का कूकना।
पीठ देना=विमुख होना, नाराज़ होना।
पीर=पीड़ा।
पीरक=दर्द जाननेवाला।
पीरजादे=पीरों के लड़के।
पुतरी=गुड़िया, पुत्तलिका।
पुरीं=पूर्ण हो गयीं।
पेखनो=(प्रेक्षण) कठपुतली का तमाशा।
पेच=घुमाव, चक्कर।
पेट की=हृदय की बात।
पेरना=तकलीफ़ देना।
पै=पय, दूध।
पै=पास।
पैयत=पाते हैं।
पैयाँ=पैर, चरण।
पोनी=रुई की मोटी बत्ती जिसे चरखे में कातते हैं।
पोर=भाग, खंड।
पोहन=पिरोना।
पौर=बरोठा।
प्रसेद=पसीना।
फकीरजादे=साधु।
फरिया=धोती।
फिराद=(फरियाद) पुकार, नालिश
फूँद=गाँठ।
फूलना=प्रसन्न होना।
बंधेज=बंदोवस्त प्रबंध।
बई=बोई (उत्पन्न की)
बकना=व्यर्थ की बात करना।
बखरी=घर।
बघारूरो=बवंडर।
बगला=बक पक्षी।
बजिकै=ताल ठोक कर।
बटपार=लुटेरा।
बटवा=बट्टा।
बड़याई बढ़ियाई=बड़ी अच्छी बात
बदन=मुख (संस्कृत)।
बदिकै=जान बूझ कर।
बदना=प्रमाण मानना।
बँधेज=बंदोबस्त, इन्तिजाम।
बन कै=अच्छी तरह से।
बनन=बानक, रूप।
बनैत=बाना (सांग) चलानेवाली।
बर=बट।
बरज दई=मना कर दिया।
बरजोरी=जबर्दस्ती।
बरसाइत=बटसावित्री पूजन का दिन, (जेठ कृष्ण अमावस) बरगदाई अमावस।

बरही=मोर।
बरावने हैं=बचाना है, बरका जाना।
बरियानी=बलवती हो गई है।
बरै=बरती है।
बलैया लेत=वात्सल्य दिखाती है।
बहना=वहन करना, चलाना, निर्वाह करना।
बहराती=बहकी हुई।
बाइरे=बादी बढ़ानेवाले।
बाँकी=विचित्र, अनोखी।
बांको=टेढ़ा।
बांची=कही, पढ़ी, पढ़कर सुनाई।
बाजे बाजे=कोई कोई।
बाना बाँधना=जिम्मे लेना।
बानिक=रूप, बननि।
बनो=विरद।
बाम=स्त्री।
बार=देरी।
बार बीच=थोड़ी ही देर में, कभी, किसी समय।
बारी=खेत के चारों ओर की आड़।
बास=स्थान।
बासन=पात्र।
बाहँको निबाह=कहे की लाज।
बाहिं गहे की=आश्रय देने का।
बाँह बसना=आश्रित होना।
बिके=बिकने से।
बिजुरी=बिजुली।
बितर=वितरण करने का काम।
बिरले=कोई कोई, बहुतों में कोई एक।
बिरानो=पराया, दूसरे का।
बिलंद=ऊँचे, बड़े।
बिवाई=पैर का एक रोग, जिसमें एंड़ियाँ फट जाती हैं।
बिसवास=प्रतीत, विश्वास।
बिसार=भुला कर।
बीदुरैन=विदुर की स्त्री।
बीधि गईं=बिद्ध हो गईं, लग गईं।
बीर=(स्त्रियों का संबोधन), भाई।
बीसक तीसक=बीस तीस।
बीस बिसै=निश्चय, (बीसो बिस्वा) परिपूर्ण।
बूझे=पूछने से।
बेंदी=(सं० विन्दु) टीका।
बेनी=चोटी।
बेनु=(वेणु) बाँसुरी।
बेब्रहा=बहुत अधिक।
बैकलानो=पागल हो जाना।
बैस=(बयस) अवस्था।
बैहर=वायु।
बोदर=छड़ी।
बोधना=सांत्वना देना।

वृन्दा=जलंधर की स्त्री।
ब्यौंत=उपाय, यत्न, युक्ति ।
भकुआ=बोदा, बुद्धू, मूर्ख।
भट्टू=भई (सम्बोधन) [सं०वधू]
भँटे=भंटा, बैंगन ।
भरंगी=(भड़ंगी) भांड़ों की प्रकृति वाले ।
भानतु है=कहता है, प्रगट करता है।
भावती=स्त्री, नायिका।
भीरी भीरी=झुण्ड झुण्ड।
भुरई=भुलाई, बहलाई, सांत्वना दे दे कर बहलाती रही।
भेद मैं=फेरमें ।
भेरना=भिड़ाना, लड़ाना ।
भोंदू=बुद्धू, मूर्ख ।
भोर=सबेरा ।
भो रहे=भयभीत हो रहे हैं ।
मघा=एक नक्षत्र ।
मटमाढ़ा=मटमैला ।
मड़े हैं=घिरे हैं ।
मनुआ=मन ।
मनु दीने=सावधानी से ।
मरोर=लहर (कष्ट) ।
महंत=स्वामी, मालिक।
माचि रही=हो रही है ।
मानपरेखो=रंज, खेद ।
मानस=(मानुष) मनुष्य ।
मापना=नापना, पैमाइश करना ।
मायके=नैहर, पीहर ।
मिजवानी=दावत देना ।
मीर=सरदार ।
मीरजादे=सरदार पुत्र ।
मीड़यौ=मल दी ।
मुकताहल=(मुक्ताफल) मोती ।
मुछारे=मुच्छवाले, बड़े मनुष्य ।
मुरके=मुड़े ।
मुरगा=अरुण-शिखा, 'मुर्गा' ।
मुरेरना=मरोड़ना, कष्टदेना ।
मूठ=मुट्ठी ।
मूँड़=सिर ।
मूसत=चुराते हैं ।
मूसर=मूसल ।
मेर=मेरु पर्वत ।
मेलत=फेकते हैं ।
मेली=डाली ।
मौज=लहरें, तरंगें।
मौरन लगे=बौर लगने लगी।
मौलसिरी=बकुल वृक्ष ।
रंगरेजा=कपड़ा रँगनेवाला ।
रखींच=रेखा, लकीर ।
रसावै=बढ़ाती है ।
रट=नाम की रटन, नामस्मरण ।

रसभंगी=प्रेम छोड़ना।

रसरंगी=प्रेमकरना।

रस भीने=रसयुक्त।

रस्यो है=आसक्त है।

राइजादे=राजपुत्र।

राखिबे को=रक्षा करने को।

राछरे=मंगल गीत, कजली के गीत।

रार=झगड़ा।

रार ठानी=लड़ाई की, झगड़ा किया।

रावजादे=छोटे राजा के पुत्र।

रिझवार=रीझनेवाले।

रिमझिम=धीरे धीरे।

रिसियैहौं=बिगड़ूँगी।

रीस=प्रसन्नता।

रीति जात=घट जाता है।

रुख=(फा०) मंशा, मनोगत भाव।

रुचा पै रुच=सुन्दरता पर प्रेम।

रेजा=कपड़े का टुकड़ा, एक थान कपड़ा।

रोचत=रुचि दिखलाता हुआ।

रौंदि=कुचल कर।

रौस=(फा० रविश) चाल, व्यवहार।

लचकारी=लचकनेवाली।

लचिये=नम्र हूजिये।

लटकत है=बंद हो जाता है।

लटपट होत हैं=बिगड़ जाते हैं, नष्ट हो जाते हैं।

लटपटे=बेठिकाने, बे तरतीब।

लटा=बुरा।

लटी=बुरी।

लफाना=टेढ़ा करना।

लली=लड़की।

ललौहैं=लाल, लाल।

लहना=जो पाना है, तहसील वसूल रकम।

लाइक=योग्य।

लाबर=लबार, झूठा।

लाबरी=झुठाई।

लाने=वास्ते, लिये।

लाले परे=दुर्लभ हो गये।

लील का टीका=कलंक का चिह्न।

लुगाई=स्त्री।

लुभानो=मोहित हुआ।

लेखा=गणना।

लोचत=प्रेम करना।

लौंई=मुलायम छड़ी।

वजन=गुरुता, बड़प्पन।

वारैं होत=निछावर होता है, बलिहार होता है।

शाहजादे=राजकुमार।

शोकित=दुःखित।

सहयत है=सहते हैं।

सँकरी=संकीर्ण।

सकाना=डरना ।
सकेलना=बटोरना ।
सकेलै=बटोरे ।
सँजोवना=इकट्ठा करना ।
सटपट=गड़बड़ी ।
सटहै=निबहैगी ।
सतराना=बिगड़ना, कुपित होना ।
सतीत करना=गीली करना, आर्द्र करना ।
सदामत=हमेशा ।
सननात=सन् सन् करता ।
सनेह रचावै=प्रेम बढ़ाती है ।
सनेह-सरद=जो प्रेम करना नहीं जानते फारसी 'सर्दमेह्' का अनुवाद है ।
समा=सावाँ ।
सरसाई=फैलाकर, बढ़ाकर ।
सरीरा=शरीर ।
सरूकन=अनुमान से, अंदाज से ।
सलोना=सुन्दर ।
सलोनो=श्रावण पूर्णिमा का दिन, रक्षाबंधन या कजली का त्यौहार ।
सहिया=कीड़ा ।
सहूर=योग्यता, गुण ।
साँकर=जंजीर ।
साँकरे=संकट ।
साध=प्रबल इच्छा ।
सापने=स्वप्न में ।
साहुजादे=धनिक पुत्र ।
सियरा=चित्त लगाकर ।
सिरजती=गढ़ती ।
सिराना=बहाना, ठंडी करना, जल में फेंकना, ठंडा होना ।
सीरी सीरी=ठंडी ठंडी ।
सुघरी=अच्छी सायत ।
सुदिन=शुभ मुहूर्त ।
सुघरै=सुन्दर ।
सुचित होय कै=सावधानी पूर्वक ।
सुरझी=ठीक की हुई ।
सूबा=सूबेदार ।
सूर-सुता=यमुना ।
सूरतहराम=देखौआ आदमी ।
सूहे=लाल रंग के ।
सैन=इशारा ।
सोध=खबर ।
सोधैं=विचारैं ।
सोर पारना=बदनाम करना ।
सोहरो=मंगल गान ।
सौत=सपत्नी ।
सौंह=शपथ ।
स्यान=सयानपन, बुद्धिमानी ।

स्यार=कायर, डरपोक।
स्वान=कुत्ता।
हकनाहक=व्यर्थ, बिना जरूरत।
हटको=मना करो।
हतो=था।
हय-गय=घोड़ा-हाथी।
हरैं=धीरे से, आहिस्ता से।
हलाहल=विष।
हलाल होना=कटना।
हिंडोरा=झूला।
हितयौ=हितुआ, मित्र।
हिरसी=लालची।
हिरदै=हृदय में।
हिरानो है=खो गया है।
हिलती हौ=पैठती हो, घुसती हो।
हिसु होत=मर जाते हैं।
हुनर=गुण।
हुलसी=आनंदित हुई।
हूक=पीड़ा।
हेत=प्रेम।
हेरना=देखना, राह देखना।
हैफ=(अरबी) अफसोस, खेद।
होड़=बराबरी की ईर्षा।
होरिहार=होली खेलने वाले।
हौस=(फा० हविस) इच्छा।
हौंसु=हौसला, इच्छा।